वर्ष 47/अंक13/मार्च/2023/मासिक

दिल्ली शिक्षा

नए युग में

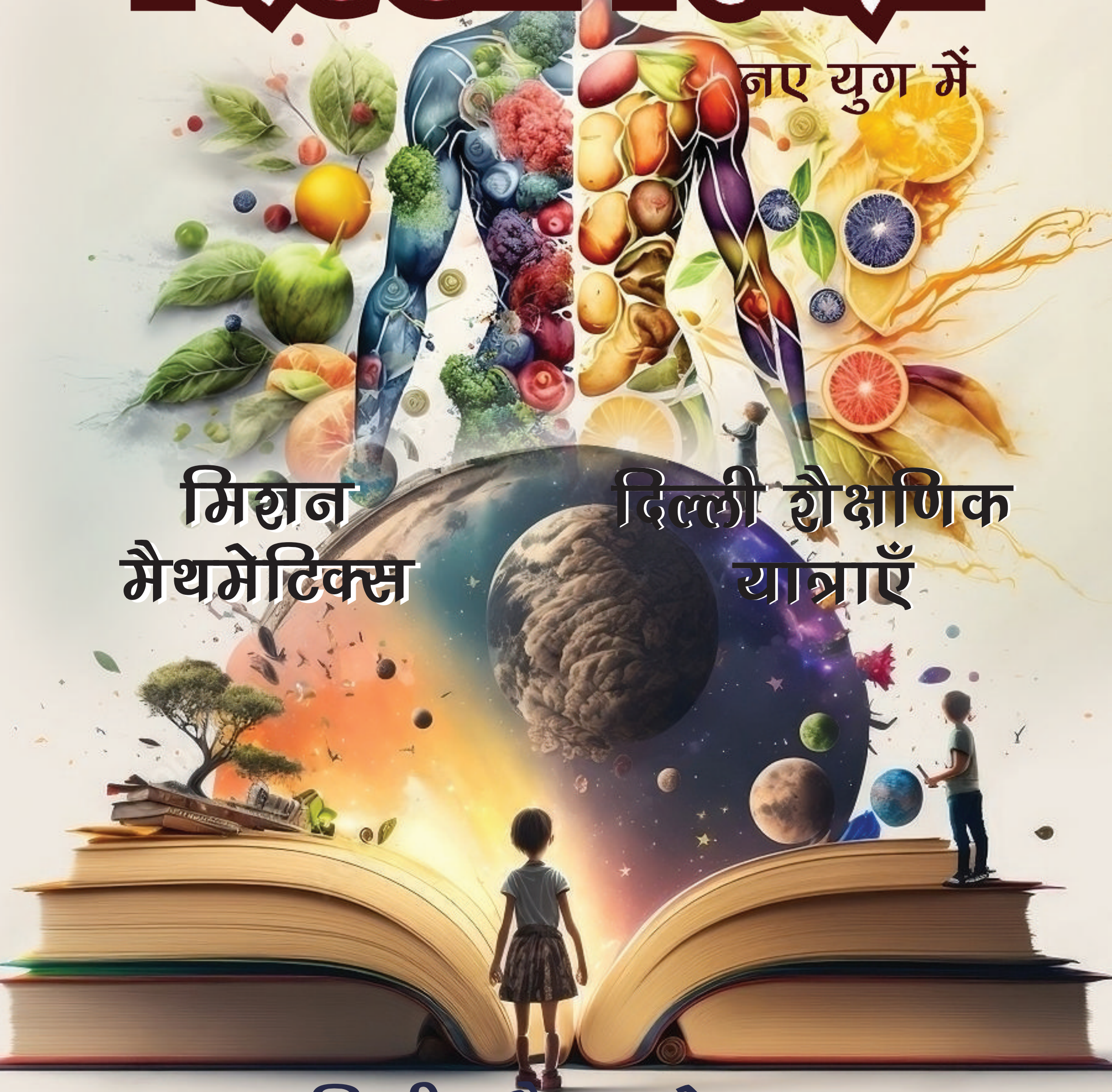

मिशन मैथमेटिक्स

दिल्ली शैक्षणिक यात्राएँ

मिनी स्नैक्स ब्रेक

दिल्ली के विद्यालयों में पौष्टिक अल्पाहार

शिक्षित राष्ट्र, समर्थ राष्ट्र
शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार

ALONE WE CAN DO SO LITTLE, TOGETHER WE CAN DO SO MUCH

Calling all the Proud Alumni of #DelhiGovtSchools Be a part of Alma Mater.

You are requested to kindly

Register on

https://education.delhi.gov.in/alumni

Directorate of Education Delhi @Dir_Education @DelhiEducationDoe

दिल्ली शिक्षा
नए युग में

विशेष आभार
अशोक कुमार, आईएएस
सचिव, शिक्षा विभाग
हिमांशु गुप्ता, आईएएस
निदेशक, शिक्षा निदेशालय
शैलेन्द्र शर्मा, शिक्षा सलाहकार

संपादक
डॉ बी पी पांडे, ओएसडी, स्कूल ब्रांच

लेआउट डिजाइन
नवीन कुमार श्रीवास्तव
कलाध्यापक

समन्वय
कादंबरी लोहिया
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

संपादकीय मंडल
अक्षय कुमार दीक्षित
टी जी टी, हिंदी
भावना सावनानी
प्रवक्ता, जीव विज्ञान
डॉ नील कमल मिश्र
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान
रविंद्र कुमार
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान
रोहित उपाध्याय
टी जी टी, गणित
सुमन रेलन
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

विशेष सहयोग
अंकित सोलंकी
मो अहसान

अंदर के पन्नों पर

01 मिनी स्नैक्स ब्रेक: दिल्ली के विद्यालयों में पौष्टिक अल्पाहार

04 अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए 999 चैलेंज

07 मिशन मैथमेटिक्स

10 अमेरिका में भारत का प्रतिनिधित्व

13 दिल्ली स्टेट कॉन्फ्रेंस

16 मेरी कक्षा का बदलता स्वरूप

19 मैं इंग्लिश बोलना चाहती हूँ

22 पौष्टिक आहार : कुपोषण पर प्रहार

24 हैप्पीनेस बाल चौपाल : क्या खोया क्या क्या पाया?

27 गणितीय चर्चा

30 एक छोटा प्रयास बड़ा आकाश

32 LIC : सीखने के नए अवसर

35 अक्षमता से क्षमता एक चुनौतीपूर्ण सफ़र

39 नागालैंड की यात्रा के अनुभव

44 मेरा खुद से शिक्षक विकास समन्वयक (टीडीसी) के रूप में साक्षात्कार

मिनी स्नैक्स ब्रेक

रेनू

GGSSS No-2, नजफगढ़

दिल्ली विद्यालयों में अल्पाहार : स्वास्थ्य का उद्गार

' स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है'

इस वाक्य को हम हमेशा से सुनते आ रहे हैं, लेकिन इसे चरितार्थ होते हुए देखने का सुअवसर तब प्राप्त हुआ , जब दिल्ली सरकार ने दिसंबर 2022 में, दिल्ली के स्कूलों में 'अल्पाहार योजना' को लागू किया। इस योजना से दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में कुपोषण के प्रति एक मुहिम सी लागू हो गई है।

इस योजना को विद्यालयों मे लागू करते समय जब अभिभावकों से भी इस पर चर्चा की गई थी तो उन्होंने बहुत सारी परेशानियों को सामने रखा था कि क्यों वे अपने बच्चों के लिए सुबह भोजन की व्यवस्था नही कर पाते हैं। कुछ सुबह ही काम पर चले जाते हैं, कुछ रोज़ रोज़ महँगी सब्जियाँ और फल नही दे सकते हैं। कुछ अभिभावक इतने तो सजग थे कि अपने बच्चों को जंक फूड नही देना परंतु भोजन कितना जरूरी है इसके प्रति थोड़े लापरवाह से थे। परंतु जैसे ही इस योजना को बताया गया तो उन्होंने सहर्ष इसको स्वीकार किया और आज वे इस मुहिम में बढ़ चढ़ कर भागीदारी कर रहे हैं।

हर एक विद्यार्थी इस प्रयास में मिलेगा कि वह अल्पाहार ले कर ही विद्यालय आए। सारी कक्षाओं में आपको फल, खीरे, ककड़ी, चने और मूँगफ़ली अवश्य नज़र आएँगे और साथ ही नज़र आएँगे चाव से खाते विद्यार्थी।

अल्पाहार योजना के चलते विद्यार्थियों में समरूपता को भी बढ़ावा मिला है। जहाँ पहले कई विद्यार्थी ऐसे होते थे जो कि कुरकुरे, चिप्स और अन्य जंक फूड नहीं ला पाते थे तो उनमे कुछ हीनभावना का भाव रहता था लेकिन इस योजना के बाद, सभी विद्यार्थी एक जैसा ही अल्पाहार लाते हैं जैसे मौसमी फल, सलाद, चने या मूँगफ़ली।

इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है कि यह अल्पाहार योजना अल्पव्ययी संसाधनों पर टिकी है। अभिभावकों की जेब पर एक खीरा, टमाटर, कोई भी मौसमी फल, या चने, उतना असर नहीं डालते जितने कि कुरकुरे और अन्य जंक फूड और इसके साथ ही ये सब कच्चे रूप में खाए जा सकते हैं, तो सभी अभिभावक आसानी से काम पर जाते हुए भी उपलब्ध करा सकते हैं। इस योजना से एक पंथ दो काज हुए हैं। एक तो सभी अभिभावकों में संतुष्टि का भाव बढ़ा है और बच्चों में स्वास्थ लाभ हुआ जिसका दूरगामी लाभ, शिक्षा के क्षेत्र में भी दिखाई पड़ेगा।

आप किसी भी विद्यालय में अल्पाहार के समय जाएँगे तो आप पाएँगे कि विद्यार्थियों में अब अपने स्वास्थ्य को लेकर समझ बन पा रही है।

अभिभावकों से आप जब चर्चा करेंगे तो आप पाएँगे कि वे भी इस योजना से बेहद संतुष्ट है, क्योंकि उनके लिए बच्चों को स्वस्थ भोजन को खिलाना एक बड़ी चुनौती थी, जिसे दिल्ली सरकार ने सरलतम बना दिया है।
अब बच्चे खुशी खुशी अल्पाहार लाते हैं और कक्षा में सबके साथ मिल कर खाते हैं। इतना ही नहीं, इस योजना से विद्यार्थियों में मिलजुल कर रहने की भावना भी बढ़ी है। बहुत बार कक्षा में देखा कि यदि कोई विद्यार्थी किसी कारणवश अल्पाहार नहीं ला पाया तो बाकी विद्यार्थी उसके साथ अपना भोजन बाँट रहे थे।

ये मानवीय मूल्यों की ओर बढ़ते कदम हैं जिनसे भविष्य में स्वस्थ मानसिकता वाले विद्यार्थियों मे बढ़ोतरी होगी।

किसी भी योजना की सफलता और असफलता उसके आँकड़ों से जाँची जाती हैं। इस योजना में यदि आँकड़ों की अगर बात करें तो चूँकि हर तीन महीने में सभी बच्चों का BMI जाँचा जाएगा, तो पहला परिणाम सुखद अनुभूति लेकर आया।

जहां पहले के आँकडे इस बात को इंगित करते हैं कि हमारे विद्यार्थी स्वास्थ्य के मामले में, अधिकतम कुपोषण के शिकार हैं, वहीं तीन महीने के बाद, दोबारा लिए गए आँकडे इस स्थिति से उभरता हुआ दिखा रहे हैं।

यह बेहद संतोषजनक है क्योंकि कोरोना जैसी महामारी के दौरान बच्चों में ना केवल शारारिक क्षमता का अभाव दिख रहा था बल्कि मानसिक रूप से भी काफ़ी प्रभावित हुए थे। ऐसी विषम परिस्थितियों को पार कर जब हम सब विद्यालयों में वापस एक साथ आए तो विद्यार्थियों का शारारिक और मानसिक स्वास्थ्य, एक बड़ी चुनौती के रूप में हमारे सामने था, जिससे हम रोज़ ही दो चार हो रहे थे, लेकिन इस योजना के चलते स्थिति में काफ़ी सकारात्मक बदलाव हुए हैं।

आँकड़ों के अलावा भी यदि एक कक्षा के विद्यार्थियों को तीन महीने पहले से आज के दिन तुलना करेंगे तो आप पाएँगे कि आज विद्यार्थियों में चुस्ती एवम स्फूर्ति पहले के मुकाबले बढ़ी है, अल्पाहार के अभाव में पहले बहुत से विद्यार्थी, कक्षा मे कुछ ही समय में ऊँघने लगते थे, या कभी चक्कर आना, सिरदर्द और पेट के दर्द से परेशान रहते थे, उनकी संख्या में कमी हुई है। भले ही धीमी रफ़्तार से, पर हम स्वास्थ्य लाभ की ओर अग्रसर हैं जो कि अपने आप में एक संतुष्टि देता है कि अब हमारे विद्यार्थी स्वास्थ्य के महत्त्व को पहचान पा रहे हैं और हम स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क के सोपान को जल्द ही पा लेंगे।

अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए- 999 चैलेंज

शिक्षा और योग का सामंजस्य

दिल्ली के 1000 से अधिक सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 18 लाख से अधिक विद्यार्थी सूर्य नमस्कार व ध्यान करेंगे। शिक्षा निदेशालय द्वारा एकीकृत स्वास्थ्य के तहत सभी सरकारी स्कूलों के लिए 999 चैलेंज शुरू किया गया है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को ध्यान व योग के बारे में बताया गया। चैलेंज की शुरुआत सी 20 के कार्यकारी समूह आई. एच.एच. (इंटीग्रेटेड हॉलिस्टिक हेल्थ -माइंड, बॉडी, एनवायरमेंट) ने की है। यह कार्यक्रम 'आयुध' के सहयोग से चलाया जा रहा है। यह एक अंतरराष्ट्रीय युवा अभियान है जो कि सी -20 की मुखिया श्री माता अमृतानंदमयी देवी जी से इंस्पायर है।

7 से 9 अप्रैल को हुई सी 20 की वार्ता में शिक्षा निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता जी ने '999 चैलेंज' की दिल्ली के विद्यालयों में शुरुआत की घोषणा की। इस वार्ता का आयोजन अमृता हॉस्पिटल के प्रांगण में फरीदाबाद में हुआ। अमृता आयुध इंडिया फाउंडेशन के राष्ट्रीय समन्वयक श्री मोक्ष अमृता जी ने बताया कि इस अनोखे 999 चैलेंज में दिल्ली के विद्यार्थियों के भाग लेने के पीछे शिक्षा निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता जी का अद्भुत सहयोग है।

रेखा यादव, टी जी टी हिंदी
SKV, आया नगर

क्या है 999 चैलेंज?

शिक्षा निदेशालय के अनुसार इस चैलेंज को लेकर 12 अप्रैल को एक ऑनलाइन संवाद सत्र आयोजित किया गया। इसमें 40 स्कूलों के प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। बाकी प्रधानाचार्य यूट्यूब से जुड़े रहे। इस सत्र के दौरान शिक्षा निदेशक महोदय जी ने सभी प्रधानाचार्यों, अध्यापकों को 999 चैलेंज के बारे में बताया। यह गतिविधि स्कूल में प्रार्थना सभा के दौरान आयोजित की जाएगी।

लॉन्च डे के दिन

प्रथम दिन श्री हिमांशु गुप्ता जी स्वयं डिफेंस कॉलोनी के एक विद्यालय में गए। उनके साथ श्री मोक्ष अमृता जी, श्री हर्ष अमृता जी, प्रदीप जैन जी, प्रवीण बिष्ट व मिनी के साथ अमृता फाउंडेशन के सदस्य भी मौजूद रहे। निदेशक महोदय व अन्य सदस्यों ने स्वयं सूर्य नमस्कार व ध्यान में भाग लिया।

18 अप्रैल 2023 को दिल्ली सरकार ने अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों व अध्यापकों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की उत्कृष्टता हेतु योग व ध्यान के लिए '999 चैलेंज' की शुरुआत की।

999 चैलेंज के मुख्य बिंदु -

1- सूर्य नमस्कार के 9 राउंड्स।

2- संसार की शांति हेतु 9 मिनट का ध्यान।

3- इनका 9 दिन तक लगातार अभ्यास।

सर्वोदय कन्या विद्यालय आया नगर की चैलेंज में भागीदारी

शिक्षा विभाग के द्वारा चयनित 40 विद्यालयों में आया नगर सर्वोदय विद्यालय का चयन हुआ यह हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है।

सर्वोदय कन्या विद्यालय आया नगर ने इस चैलेंज को संपूर्ण लगन व उत्साह के साथ स्वीकार किया। विद्यालय की उप -प्रधानाचार्या श्रीमती बबीता ने अपनी निगरानी में इस कार्यक्रम को मूर्त रूप प्रदान किया। विद्यालय में 999 के चैलेंज में अपना योगदान देते हुए तीन नौ और जोड़ दिए। विद्यालय के प्रांगण में 9वीं कक्षा की 99 छात्राओं ने प्रतिदिन 9 राउंड्स का सूर्य नमस्कार किया व ध्यान के कार्यक्रम में उत्साह व जोश के साथ भाग लिया।

अन्य छात्राओं ने अपनी कक्षाओं में रहते हुए ध्यान की प्रक्रिया में भाग लिया। विश्व शांति के इस कार्य में अमृतानंदमयी की ध्यान पद्धति के साथ ध्यान की प्रक्रिया को संपन्न किया गया। यह कार्य महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के मार्गदर्शन में शुरू किया गया। यह कार्य विश्व शांति के पथ पर माता अमृतानंदमयी जी के सहयोग से संपूर्ण दिल्ली के विद्यालयों में वैश्विक शांति की ओर बढ़ाया गया कदम है। आने वाले समय में यह कदम विद्यार्थियों व अध्यापकों के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार व सुदृढ़ निर्माण के मार्ग में मील का पत्थर साबित होगा।

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की अध्यापिकाओं श्रीमती अलका शर्मा, श्रीमती कंचन कौशिक, श्रीमती प्रीति गुप्ता व श्रीमती विनीता यादव के सहयोग व देखरेख में यह चैलेंज सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

अमृतानंदमयी जी के संस्थान की तरफ से विद्यालय में श्री मोक्ष अमृता जी, श्री हर्ष अमृता जी व श्री अरुण जैन जी ने विद्यालय में उपस्थित होकर छात्राओं व अध्यापिकाओं के द्वारा संपन्न योग व ध्यान की गतिविधियों का अवलोकन किया। छात्राओं व अध्यापिकाओं की सभी ने भूरी भूरी प्रशंसा की तथा उप प्रधानाचार्या जी के सहयोग की सराहना की।

माता अमृतानंदमयी जी के संस्थान से आए सम्मानित सदस्यों ने छात्राओं का मार्गदर्शन किया। साँस लेने और छोड़ने की उचित प्रकिया व सूर्य नमस्कार करने का सही तरीका बताया। छात्राओं व अध्यापिकाओं के विचार व अनुभव भी जानने का प्रयास किया गया। छात्राओं ने सूर्य नमस्कार व ध्यान से उनके जीवन पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों का संपूर्ण विवरण दिया।

उन्होंने बताया कि सूर्य नमस्कार व ध्यान प्रतिदिन करने से उनमें एकाग्रता बढ़ी है, तनाव व चिड़चिड़ापन दूर हो रहा है, शरीर अधिक स्फूर्ति का अनुभव कर रहा है।
अध्यापिकाओं ने भी अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि योग व ध्यान से दैनिक आदतों में सुधार हो रहा है,कार्य के प्रति निरंतरता बढ़ रही है और तनाव कम महसूस हो रहा है। छात्राओं ने बताया कि ये चैलेंज छात्राओं व अध्यापिकाओं के उत्कृष्ट शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की ओर एक अद्भुत पहल है। इस पावन अवसर पर श्रीमान मोक्ष अमृता जी ने छात्राओं को सूर्य नमस्कार से होने वाले अनेकों फायदों से अवगत करवाया। साथ ही साथ उन्होंने ध्यान के लाभ भी छात्राओं को बताएँ ।

उन्होंने बताया कि सूर्य नमस्कार करने से हमारा शरीर लचीला होता है, एकाग्रता बढ़ती है,हमारा हाजमा अच्छा रहता है साथ ही बच्चों की एकाग्रता बढ़ने के कारण पढ़ाई में भी उनका मन लगता है।
उन्होंने बताया कि सभी को यह खाली पेट करना चाहिए। अगर हम साँसों पर ध्यान नहीं देंगे कि साँस कब लेना है और कब छोड़ना है, तो हमारा सूर्य नमस्कार योग ना होकर सिर्फ एक शारीरिक गतिविधि बनकर रह जाएगा।

श्री हर्ष अमृता जी ने अपनी मधुर वाणी से बच्चों को ध्यान की गतिविधि करायी जिससे कि वह गतिविधि और भी अधिक रुचिकर और ध्यान पूर्वक संपन्न हो पायी। अध्यापिकाओं ने भी छात्राओं के साथ मिलकर योग व ध्यान किया। इस कारण छात्राओं ने भी अधिक रूचि का प्रदर्शन किया।

छात्राओं की शिक्षा में योग एक सम्बल का काम करेगा क्योंकि आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के क्षेत्र में अवसाद,चिड़चिड़ापन,तनाव व एकाग्रता की कमी एक अवरोध का काम करती है, योग जिसका एकमात्र सहज और अचूक नुस्खा है। समस्त विश्व की शांति के मार्ग में "ध्यान समस्ता लोकः सुखिनो भवंतु" के मूल मंत्र के साथ सहयोगी कदम है।
'योग भगाए रोग' यह एक पुरानी कहावत है जिससे 999 चैलेंज के माध्यम से विद्यालय चरितार्थ करने की ओर अग्रसर है।

'योग वह प्रकाश है जो एक बार जला दिया जाए तो कभी कम नहीं होता। जितना अच्छा आप अभ्यास करेंगे लौ उतनी ही उज्ज्वल होगी' ।
साथ ही, ध्यान का बीज बोएँ, और मन की शांति का फल पाएँ। हमारे विद्यालय ने योग व ध्यान के फल का स्वाद चख लिया है, साथ ही संपूर्ण दिल्ली के छात्र भी इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

सर्वोदय कन्या विद्यालय आया नगर का समस्त विद्यालय परिवार इस चैलेंज को स्वीकार करने के बाद दैनिक जीवन में सूर्य नमस्कार व योग को अपनाने की राह में प्रतिज्ञाबद्ध व उत्साहित है।

सोनम भाटिया, टी जी टी, गणित

टीचर डेवलपमेंट कोऑर्डिनेटर
GGSSS ब्रह्मपुरी

Mission Mathematics
एक अभिनव प्रयोग

यूँ तो हमारे दिल्ली के सरकारी स्कूलों में हर सप्ताह, हर महीने कुछ नये और अच्छे कदम उठाये जा रहे हैं जो कि हमारे बच्चों के हित में होते हैं। इन्हीं नवाचारों में से एक क़दम "मिशन मैथमेटिक्स" भी है, जो कि अपने आप में बेहद महत्वपूर्ण पहल है।

गणित एक ऐसा विषय है जिससे बहुत से विद्यार्थियों को डर लगता है। वे सवालों को समझने की जगह रटने पर ज्यादा ध्यान देते हैं। विद्यार्थियों को गणित रुचिकर तरीके से कैसे पढ़ाई जाए और उनके मन से गणित के प्रति भय को कैसे निकाला जाये अक्सर यह गणित के अध्यापक के सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है। दिल्ली के सरकारी स्कूलों में इस चुनौती का समाधान ढूँढ़ने के लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इसी क्रम में विद्यालयों में "मिशन मैथमेटिक्स" कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

इस कार्यक्रम के तहत दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए प्रतिदिन एक घंटे की गणित की उपचारात्मक शिक्षण कक्षाओं का आयोजन किया गया जिसमें शिक्षा निदेशालय द्वारा उपलब्ध कराइ गई गणित की वर्कशीट्स अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को रोचक तरीके से करवाई गई। मज़े की बात यह रही कि इस वर्ष 2022-23 के दसवीं कक्षा की बोर्ड की परीक्षा में इन वर्क शीट्स में से बहुत से प्रश्न भी पूछे गए थे।

"मिशन मैथमेटिक्स" के अंतर्गत दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में कार्यरत गणित विषय के अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए गणित विषय की शिक्षण सामग्रियों पर आधारित एक TLM कॉम्पिटिशन भी आयोजित किया गया। गणित विषय को विद्यार्थियों के बीच और रुचिकर बनाकर ले जाने की दिशा में यह प्रतियोगिता एक मील का पत्थर साबित हुई।

अक्सर विद्यार्थियों के बीच प्रतियोगिता के बारे में तो हम सब सुनते रहते हैं लेकिन अध्यापक/अध्यापिकाओं कि बीच ये TLM कॉम्पिटिशन के विषय में मैंने भी पहली बार ही सुना। मेरे मन में इस प्रतियोगिता के विषय में जानने की इच्छा हुई।

मैं देखना चाहती थी कि TLM कॉम्पिटिशन क्या है और इसको आयोजित करवाने के पीछे क्या उद्देश्य हो सकते हैं।

अपने मन में उठी इस जिज्ञासा ने मुझे इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। जिन अध्यापक/अध्यापिकाओं के TLM स्कूल स्तर पर प्रथम आये उनको, Zonal Level पर भाग लेने का मौका मिला।

जोनल लेवल पर अपने TLM के साथ जब मुझे गणित विषय की विभिन्न संकल्पनाओ को आसानी से समझाने के लिए साथी अध्यापकों द्वारा प्रदर्शित शिक्षण सामग्रियों को देखने का अवसर मिला तब मुझे यह भी एहसास हुआ कि इस प्रतियोगिता को कराने के पीछे कितनी बड़ी सोच थी। मैंने देखा कि हमारे ही जोन से में कम से कम 120-130 TLMs इस प्रतियोगिता का हिस्सा बने। सभी अध्यापक/अध्यापिकाओं ने एक दूसरे के TLM को देखा , समझा ,उनको बनाने और फिर उनसे पढ़ाने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की।

अध्यापक/अध्यापिकाओं ने अपने TLM की क्या विशेषताएँ एक दूसरे से साझा की। यह ज्ञान प्रवाह यहीं नहीं रुका, ज़ोनल लेवल पर चयनित अध्यापक/अध्यापिकाओं को राज्य स्तर पर शिक्षा निदेशक महोदय "श्री हिमांशु गुप्ता" जी के द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

इस प्रतियोगिता का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि इसमें शामिल होने वाले अध्यापकों ने अपने TLMs के बारे में अनुभव साथी अध्यापकों से साझा किये। अब उनके पास कम से कम 100-125 से ज़ायदा TLM के आइडिया इकट्ठे हो गये।

अध्यापकों ने अपने अपने स्कूल में जाकर बाकी अध्यापकों और विद्यार्थियों को भी इस विषय पर विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराई। विद्यार्थियों ने नये नये आईडिया लेकर अपने अपने TLM बनाये जिससे गणित जैसा विषय भी विद्यार्थियों को लोकप्रिय लगने लगा।

हमारे अध्यापकों और बच्चों के द्वारा बनाये गये कुछ TLMs

हमारे विद्यालय में गणित विषय के अध्यापक इन्ही TLMs की सहायता से गणित पढ़ा रहे हैं। अब गणित केवल ब्लैक बोर्ड पर ही नहीं बल्कि बरामदों , खेल के मैदानों या विद्यालय की गैलरी में भी पढ़ाया जा रहा है। हमारे विद्यार्थी अब गणित को रटते नहीं बल्कि वे खुद TLM का प्रयोग करते हुए खेल खेल में ही गणित में अपनी समझ बना रहे हैं। हमारे विद्यार्थी गणित के पीरियड के अलावा गेम्स के पीरियड में भी खेल के मैदान में इन्टीज़र्स की ट्रेन पर खेलते हैं और इंटीज़र्स को जोड़ना घटाना सीखते हैं।

साँप सीढ़ी के स्थान पर नंबर्स एंड लेडर्स पर पासे के साथ खेल खेल में अंकों की गुणा सीखते और फिर उनका अभ्यास करते हैं। कुछ TLMs ऐसे हैं जो विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए बनाये गये हैं जिनसे विद्यार्थी खेल खेल में बिना किसी डर के सवाल हल कर रहे हैं

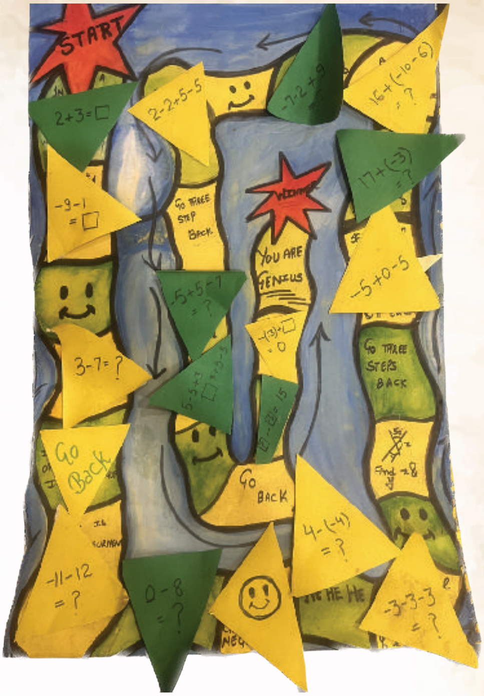

विद्यार्थियों के मन में गणित के प्रति जो डर था वह धीरे धीरे ख़त्म होता जा रहा है। यह सब देख कर अब समझ आ रहा है कि अध्यापकों की इस प्रतियोगिता का हमारे बच्चों पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ रहा है।

एक गणित की शिक्षिका होने के नाते मैंने महसूस किया कि मात्र ब्लैक बोर्ड पर लिखने से ही हम अपने विद्यार्थियों को नहीं सिखा सकते। हमें यह देखना होगा कि हमारे विद्यार्थी कहीं हमारे पढ़ाने को बोझ तो नहीं समझ रहे। हमें कोशिश करनी होगी कि हमारे बच्चे खेल खेल में ही गणित सीख जायें और वे गणित से दूर ना भागें। मिशन मैथमेटिक्स इस तरफ़ एक कामयाब कोशिश है।

अमेरिका में भारत का प्रतिनिधित्व

कामायनी जोशी, प्रवक्ता,अंग्रेजी
RPVV Sec 10 द्वारका

दिल्ली के शिक्षा निदेशालय ने अध्यापकों के व्यावसायिक विकास पर निरंतर काम किया है। ऐसे ही कार्यक्रमों के तहत अंग्रेजी के मेंटर टीचर्स को रेलो इंडिया द्वारा इंग्लिश पेडागोजी (शिक्षा शास्त्र) पर समय समय पर प्रशिक्षित किया जाता रहा है ।

रेलो द्वारा यह प्रशिक्षण कई चरणों में हुआ। इस परीक्षण में अच्छा प्रदर्शन करने पर GGSSS ककरोला में लेक्चरर इंग्लिश के पद पर कार्यरत सुश्री कामायनी जोशी को अमेरिका में तीन हफ्ते (3 मार्च से 25 मार्च 2023) के प्रशिक्षण शिविर एवम TESOL कन्वेंशन एंड लैंग्वेज एक्सपो के लिए यू एस डिपार्टमेंट ऑफ़ स्टेट द्वारा एलुमनाई एक्सेस एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए चयनित किया गया।

'अंग्रेजी कक्षा में सामाजिक भावनात्मक शिक्षा' विषय पर वाशिंगटन DC में आयोजित वर्ल्ड लर्निंग प्रोग्राम में कामायनी जोशी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया । यह प्रोग्राम दो हफ्ते का था और इस कार्यक्रम में 25 देशों से आये शिक्षकों ने भाग लिया। दक्षिण पूर्व एशिया, पूर्वी यूरोप, मध्य एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमरीका के देश इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल थे।

World Learning
EDUCATION | DEVELOPMENT | EXCHANGE

दो हफ्ते के इस कार्यक्रम में सामाजिक भावनात्मक शिक्षा (SEL) पर विभिन्न गतिविधियों, समूह कार्य , पोस्टर प्रस्तुति और प्रोजेक्ट कार्य में कामायनी जोशी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और दिल्ली में चल रहे हैप्पीनेस करिकुलम के विषय में सभी को अवगत कराया। सभी ने इस अद्वितीय करिकुलम के विषय में और जानकारी के लिए अपनी उत्सुकता प्रकट की।

"डॉ. रेडमिला पोपोविक, डॉ. कारा मैकब्राइड तथा डॉ. होली मार्विन जो कि SEL विशेषज्ञ हैं, ने हमें दो हफ्ते SEL से संबंधित गतिविधियों द्वारा कक्षा में बच्चों के साथ तथा सहभागी शिक्षकों के साथ की जाने वाली अनेक गतिविधियाँ सिखायीं।

शब्दहीन किताबें, थिंक, प्रकृति जर्नलिंग, कासेल फ्रेमवर्क, प्रतिक्रिया, रोले प्ले, डिक्टेशन, आइडेंटिटी व्हील, ग्रंथसूची, निर्देश, प्रतिबिंब , आकलन प्रमुख विषय रहे। आज के सन्दर्भ में, जबकि विश्व अनेक प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है, कक्षा में सामाजिक भावनात्मक शिक्षा का महत्त्व बहुत कारगर हो सकता है।

अंग्रेजी के विभिन्न उच्चारण सुनना, समझना और विभिन्न संस्कृतियों के प्रतिनिधियों के साथ सीखना, पोस्टर प्रस्तुति , समूह में कार्य करना, माइक्रो टीचिंग के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से देखना, और सभी देशों के शिक्षकों के साथ मिलकर प्रोजेक्ट प्रस्तुति करना मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव था। मुझे यह पूरा एहसास था कि मैं यहाँ भारत का प्रतिनिधित्व कर रही हूँ और मेरा आचरण, व्यवहार या मेरा कार्य भारत की तस्वीर रहेगा।

मुझे खुशी एवं गर्व है कि मैंने यह कार्य अच्छी तरह निभाया और सभी देशों के शिक्षकों ने दिल्ली के साथ शिक्षा में हो रहे कार्यक्रमों में भाग लेने में रूचि दिखाई।

"वाशिंगटन DC में वाइट हाउस, म्यूजियम, कम्युनिटी कॉलेज, कम्युनिटी स्कूल इत्यादि के भ्रमण से SEL के व्यावहारिक पहलू की भी झलक देखने को मिली। शाम को फुर्सत के पलों में हम सब Washington के सांस्कृतिक स्थलों, स्मिथसोनियन म्यूजियम और वास्तु. कला देखने जाते थे। प्लेनेट वर्ड म्यूजियम हम सब का सब से पसंदीदा म्यूजियम रहा। यहाँ भाषा से संबंधित कई अद्भुत प्रस्तुतियाँ, चित्रों द्वारा भाषाई खेल, प्रश्नावली, कथा वाचन, किताबें इत्यादि थे।

लिथुएनिया से आयी एक शिक्षिका ने हमें लिथुनैयन एम्बेसी में एक संगीतमयी शाम का आनंद भी कराया। एक वाद्ययंत्र 'कंकलेस' जो कि कुछ संतूर जैसा होता है, को सुनने का आनंद मिला। इन सभी मित्रों के साथ बिताये ये दो हफ्ते अपने जीवन में हमेशा यादगार रहेंगे। हम सभी साथी सामाजिक मीडिया द्वारा लगातार संपर्क बनाकर अपने अपने विद्यालयों तथा देशों में हो रहे शोध , कार्यक्रम एवम गतिविधियाँ साझा करते रहते हैं।

इसके पश्चात पोर्टलैंड शहर में 21- 25 मार्च तक TESOL कन्वेंशन एंड लैंग्वेज एक्सपो में देश- विदेश में अंग्रेजी भाषा में हो रहे प्रयोगों के बारे में जानने का अवसर मिला। कन्वेंशन में 66 देशों के प्रतिनिधियों के साथ एक भव्य समारोह में हज़ारों शिक्षाविदों ने भाग लिया। विभिन्न देशों में अंग्रेजी पढ़ने- पढ़ाने में हो रहे शोध सबसे साझा किये गए।

RELO इंडिया के मेंटर टीचर्स के साथ अलग अलग व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रमों के विषय में दक्षिण एशियाई देशों की प्रस्तुति में सुश्री कामायनी जोशी को प्रस्तुति करने का अवसर मिला। दिल्ली में भारत की RELO हेड, रुथ गुड, के साथ इन्होंने इन व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रमों से कक्षा तक पहुँच रही गतिविधियों के विषय में कांफ्रेंस में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में इन्होंने अपने ऑनलाइन कार्यक्रम WELOVETALKING सीरीज के विषय में भी जानकारी दी।

इस ऑनलाइन सीरीज में दिल्ली के सरकारी विद्यालयों के बच्चे देश विदेश के सरकारी विद्यालयों के बच्चों के साथ क्रॉस सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा अपने अंग्रेजी के संचार कौशल को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं। अनेक देशों के शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में अपनी रूचि ज़ाहिर की और ऑनलाइन जुड़ने की इच्छा प्रकट की। दिल्ली की शिक्षा क्रांति के बारे जानने में सभी ने अपनी दिलचस्पी दिखाई।

इस कार्यक्रम में भाग लेकर मेरा

आत्मविश्वास बढ़ा। इतनी लम्बी हवाई यात्रा, अलग अलग शहरों से हवाई जहाज़ बदलना, अकेले यात्रा करना, बेझिझक किसी से बात करना, जानकारी लेना, इत्यादि ने मुझे खुद पर विश्वास करना सिखाया। तरह तरह के लोगों, देशों, व्यवहार और संस्कृति को करीब से देखने पर मेरे दृष्टिकोण में सकारात्मक ऊर्जा आयी।

ऐसे अवसर सभी शिक्षकों को मिलने चाहिए ताकि हम वसुधैव कुटुम्बकम को सही मायने में जी सकें।

"मैं दिल्ली शिक्षा निदेशालय का और रेलो इंडिया का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे यह सुअवसर प्रदान किया।

रोहित उपाध्याय और शादाब अहमद

TGT गणित
GBSSS नई फ्रेंड्स कॉलोनी

एसोसिएट हेड प्रोग्राम
STIR एजुकेशन

दिल्ली स्टेट कॉन्फ्रेंस

स्टोरीज़ ऑफ़ चेंज: चेंजिंग बिहेवियर्स, ट्रांसफ़ॉर्मिंग एजुकेशन सिस्टम्स (व्यवहारों को बदलने से, शिक्षा प्रणालियों को परिवर्तित करने तक)

(SCERT) दिल्ली शिक्षा निदेशालय और STiR के सहयोग से सेंटर फॉर इंट्रिंसिक मोटिवेशन ने 14 मार्च 2023 को 'स्टोरीज़ ऑफ़ चेंज: चेंजिंग बिहेवियर्स, ट्रांसफ़ॉर्मिंग एजुकेशन सिस्टम्स' शीर्षक से राज्य-स्तरीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। इस कॉन्फ्रेंस में शिक्षाविदों ने अपने व्यवहार परिवर्तन के अनुभव को साझा किया और यह बताया कि व्यवहार परिवर्तन ने कैसे शिक्षण और प्रशिक्षण के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल दिया है।

कॉन्फ्रेंस ने एक साझा समझ विकसित करने में मदद की कि कैसे Teacher Development Coordinator (टी.डी.सी) कार्यक्रम ने दिल्ली में शिक्षा प्रणाली में सभी हितधारकों में व्यवहार परिवर्तन में योगदान दिया है।

श्रीमती आतिशी, माननीय शिक्षा मंत्री, एनसीटी दिल्ली सरकार, श्री शैलेन्द्र शर्मा, प्रधान सलाहकार निदेशक शिक्षा, SCERT के संयुक्त निदेशक डॉ. नाहर सिंह, श्री अनिल सैनी, डाइट भोलाना. थ नगर के प्रिंसिपल डॉ. अनिल तेवतिया, डाइट कड़कड़डूमा के प्रिंसिपल डॉ. मोहम्मद ज़मीर, पीपल एनजीओ की सीईओ सुश्री कृति भरूचा और STiR-सेंटर फॉर इंट्रिंसिक मोटिवेशन की कार्यकारी निदेशक सुश्री स्वाहा साहू ने कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर के किया ।

संदर्भ सत्र में सुश्री स्वाहा ने दिल्ली की शिक्षा मंत्री, सुश्री आतिशी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की भूमिका के बारे में उल्लेख किया, जो Teacher Development Coordinator (TDC) कार्यक्रम को दिशा देते और मार्गदर्शन करते रहे हैं । उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा मंत्री के दृष्टिकोण और प्रयासों से ही इस कार्यक्रम की परिकल्पना की गई थी। इसके अलावा, उन्होंने बताया कि TDC कार्यक्रम के माध्यम से यह कोशिश की गयी कि सभी छात्र - छात्राएं अपनी कक्षाओं में "Engaged" रहें जिससे वे "Curious" और "Critical Thinker" बनें। स्वाहा ने आशा व्यक्त की, कि इस कार्यक्रम से शिक्षक और अधिकारी छात्रों के लिए इन व्यवहारों को रोल मॉडल करेंगे और उनके प्रेरणास्रोत बनेंगे। साथ ही अपेक्षा की जाती है कि इस पूरी प्रक्रिया को तथा शिक्षकों को पूरा एजुकेशन सिस्टम इसी तरह से आगे भी सपोर्ट करता रहेगा ।

कॉन्फ्रेंस के पहले सत्र में, उपस्थित शिक्षक, छात्र और अधिकारियों ने अपने व्यवहार में परिवर्तन के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया। इस सत्र में शिक्षक, छात्र और अधिकारी शामिल थे जिन्होंने एक सहयोग और सम्मान की संस्कृति के महत्व को सुनिश्चित करने के लिए बल दिया। विशेष रूप से, DoE के सरकारी स्कूलों के छात्रों ने उल्लेख किया कि शिक्षकों और स्कूल से गहरा संबंध होने के कारण कक्षा में उनके आत्मविश्वास के स्तर के साथ-साथ उनकी जिज्ञासा और प्रश्न पूछने के कौशल में काफी वृद्धि हुई है।

अधिकारियों ने साझा किया कि शिक्षा प्रणाली के भीतर सभी स्तरों पर रोल मॉडल बनने के लिए व्यवहार परिवर्तन कितना महत्वपूर्ण है, और शिक्षा मंत्री और श्री शैलेंद्र शर्मा के समर्थन से टीडीसी कार्यक्रम ने अपनी स्थापना के पाँच वर्षों में इसे कैसे संभव बनाया है। इस सत्र को शदाब अहमद, इंट्रिंसिक मोटिवेशन के केंद्र के एसोसिएट हेड ने मोडरेट किया।

मुख्य सत्र में, माननीय शिक्षा मंत्री सुश्री आतिशी ने सम्मान और गरिमा के माध्यम से हितधारकों और अधिकारियों में निवेश करके उन्हें प्रेरित करने के दिल्ली के अनुभव के बारे में बात की। उन्होंने शिक्षा प्रणाली में कोई भी बदलाव लाने के लिए शिक्षकों को महत्व देने और उनमें निवेश करने के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने साझा किया कि 8 साल की कार्यक्रम यात्रा के बाद, हितधारक (माता-पिता, छात्र, शिक्षक) आज अपने स्कूल को बहुत गर्व के साथ देखते हैं क्योंकि इस बदली हुई व्यवस्था ने उन्हें उनकी उचित गरिमा और सम्मान दिया है, चाहे वह माता-पिता-शिक्षक बैठकों के दौरान हो या सामान्य तौर पर। इससे हितधारकों के बीच मजबूत स्वामित्व की भावना आई है। अंत में, शिक्षा मंत्री ने प्रत्येक हितधारक - डाइट फैसिलिटेटर्स, ब्लॉक रिसोर्स पर्सन्स, मेंटर टीचर्स, टीचर डेवलपमेंट कोऑर्डिनेटर्स, शिक्षकों, छात्रों और ज्ञान भागीदारों विशेष रूप से STiR को बधाई दी, जिन्होंने दिल्ली शिक्षा प्रणाली में इस बड़े बदलाव के लिए अपने प्रेरणा स्तर और योगदान को उत्साहपूर्वक बनाए रखा।

पैनल चर्चा 'व्यवहार परिवर्तन लेंस के माध्यम से शिक्षा की प्राथमिकताओं को प्रभावित करना' में विशेषज्ञ पैनलिस्टों ने 'परिवर्तन' पर अपने विचार साझा किए और यह भी बताया कि उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में इसका अनुभव कैसे किया। उन्होंने प्रतिभागियों के सवालों के जवाब भी दिए। प्रो. धनंजय जोशी ने उल्लेख किया कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम निर्धारित किया है, जिसे दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय में बी.एड और एम.एड कार्यक्रमों के लिए प्रासंगिक और अधिक नवीन बनाया गया है।

विश्वविद्यालय का उद्देश्य दिल्ली में एससीईआ. रटी और शिक्षा निदेशालय के बीच की खाई को पाटना है । इसे कई भारतीय और विदेशी विश्व. विद्यालयों से समर्थन भी प्राप्त हुआ है। दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय का आदर्श वाक्य विश्व स्तर पर सोचना और स्थानीय स्तर पर कार्य करना है। एनसीटी दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय में शिक्षा निदेशक के प्रधान सलाह. कार श्री शैलेंद्र शर्मा ने साझा किया कि व्यवहार परिवर्तन प्रणाली में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने के लिए एमटी और टीडीसी कार्यक्रम की शुरुआत की गई थी। परिणामस्वरूप, सिस्टम में कई शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में नवीन चीजें करने का बीड़ा उठाया है, जिसे सिस्टम का पूरा समर्थन मिल रहा है।

डॉ. अनिल तेवतिया (डाइट प्रिंसिपल, दिलशाद गार्डन) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ। उन्होंने कहा कि सम्मेलन के विषय "बदलाव की कहानियाँ: बदलते व्यवहार, बदलती शिक्षा व्यवस्था" ने प्रभावी रूप से प्रदर्शित किया है कि दिल्ली शिक्षा प्रणाली के सभी स्तरों पर किस तरह परिवर्तन का अनुभव किया गया। उन्होंने शिक्षा प्रणाली में व्यवहार परिवर्तन के महत्व पर बल देने में सम्मेलन की सफलता को भी स्वीकार किया, जिससे छात्रों के कक्षा के अनुभवों में सकारात्मक सुधार आ सकता है। अंत में उन्होंने शिक्षक विकास समन्वयक कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी और बहुमूल्य योगदान के लिए डीओई, एससीईआरटी, डाइट फैसिलिटेटर्स, डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर्स, मेंटर टीचर्स, टीचर डेवलपमेंट कोऑर्डिनेटर्स, स्टूडेंट्स और STiR सेंटर फॉर इंट्रिंसिक मोटिवेशन सहित सभी प्रतिभागियों, मेहमानों और हितधारकों का आभार व्यक्त किया।

कुल मिलाकर, सम्मेलन में टीडीसी कार्यक्रम की परिवर्तनकारी शक्ति और दिल्ली में शिक्षा प्रणाली के सभी स्तरों को इसने कैसे प्रभावित किया है, इस पर प्रकाश डाला गया।

मेरी कक्षा का बदलता स्वरूप

मंजू भंडारी, टी जी टी विज्ञान
GGSSS, झिलमिल कॉलोनी

दिल्ली में मेंटर टीचर, 2016 से विद्यालयों में एक अहम भूमिका निभाते आ रहे हैं जिसमे वे अलग अलग विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था को समझ कर अपने शिक्षक साथियों को विद्यार्थियों के हित के लिए सुझाव देते हैं।

कई विद्यालयों में मैंने यह पाया कि बहुत से विद्यार्थी कक्षा में चल रही पठन पाठन की प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने में हिचकिचाते हैं। विद्यार्थियों से बातचीत करने के बाद एहसास हुआ कि उनकी इस हिचकिचाहट के पीछे एक डर छुपा हुआ है।

विद्यार्थियों के मन में इस बात का डर रहता है कि गलत उत्तर देने पर शिक्षक उन्हें डाँट लगा सकते हैं या फिर उनके साथी उनका मजाक उड़ाएँगे। अक्सर विद्यार्थियों में इस प्रकार का डर आगे चलकर उनके अन्दर के आत्मविश्वास को कमज़ोर बना सकता है। इस डर को मिटाने के लिए हम सभी शिक्षकों को मिल कर काम करना होगा। शिक्षकों एवं मेंटर्स को मिलकर ऐसे उपाय निकालने होंगे जिससे विद्यार्थियों की हिचक दूर हो जाए और वे खुल कर कक्षा में भाग ले सकें।

नेशनल एजुकेशन पालिसी 2020 के अंतर्गत यह बताया गया है कि शिक्षक कक्षा में एक फैसिलिटेटर की भूमिका निभाए, यानी कि कक्षा में विद्यार्थियों को मिलकर समस्या सुलझाने का समय दिया जाए। केवल किसी विषय पर लेक्चर देना काफी नहीं है।

एक लेक्चर के बाद यह जाँचना कि विद्यार्थियों को वह विषय कितना समझ आया है, यह भी ज़रूरी है। यह जाँच विद्यार्थियों की तब की जा सकती है जब हम उन्हें उस विषय पर कक्षा में ही स्वयं काम करने का मौका दें और जब वे किसी भी दिक्कत का सामना करें तो दूसरे विद्यार्थी मदद करें।

इस प्रकार सभी विद्यार्थी मिल जुल कर सीखें। अगर सभी विद्यार्थी समस्या ना सुलझा पाएँ तो शिक्षक उस विषय को एक बार फिर बच्चों को समझाएँ।

एक दिन एक विद्यालय में मैंने इस तकनीक को दसवीं कक्षा में अपनाने का निर्णय लिया। मैंने दसवीं कक्षा में छात्रों को विज्ञान के विषय में शामिल किया। सबसे पहले कक्षा को पाँच-पाँच छात्राओं के समूह में बाँट दिया गया। मैंने प्रत्येक समूह को विज्ञान के एक पाठ से अलग अलग प्रश्न हल करने को दिये। सभी प्रश्न हिंदी और इंग्लिश दोनों भाषाओं में दिए गए ताकि छात्र अपनी इच्छा से किसी भी भाषा का प्रयोग करके अपना उत्तर दे सकें।

प्रत्येक समूह को उस प्रश्न को पढ़ने और चर्चा करने का समय दिया गया। फिर सभी को अपने उत्तर लिखने का समय दिया गया। इसके बाद प्रत्येक समूह ने अपना प्रश्न बाकी साथियों के सामने साझा किया।

प्रत्येक समूह द्वारा विषय समझाने से पहले, उनके प्रश्न का उत्तर बाकी साथियों से पूछा गया। कक्षा में जितने भी विद्यार्थी उत्तर देने में सफल हुए , मैंने उनकी प्रशंसा कर उनका उत्साह बढ़ाया। इसके बाद हर समूह को अपने प्रश्न का उत्तर बाकी साथियों के साथ साझा करने का मौका दिया गया।

अपने प्रश्न पर आपस में चर्चा करने के दौरान जहाँ भी छात्रों को मदद की ज़रूरत पड़ी, मैंने बड़े इत्मिनान से उन्हें समझाया। कक्षा में एक नए तरकीब से विषय समझने के इस खेल में छात्रों ने बहुत कुछ नया सीखा और उनका स्वयं पर विश्वास भी कई गुणा बढ़ा।

इस प्रक्रिया में शिक्षक: छात्र टॉकटाइम अनुपात 20 रु० 80 रहा। यह तकनीक आप भी अपनी कक्षा में आज़माएँ। अगर एक पीरियड में सभी ग्रुप अपनी प्रस्तुति ना दे पाए तो इस गतिविधि को हम अगले दिन भी जारी रख सकते हैं ताकि सभी छात्रों को इसमें भाग लेने का मौका मिले।

इस प्रक्रिया में प्रत्येक विद्यार्थी ने अपने समूह के अंतर्गत मज़े से भाग लिया और अपने साथियों की मदद से प्रश्न का पूरा उत्तर भी लिखा। छात्रों के चेहरों की मुस्कुराहटों में कक्षा में पूरी तरह से भाग लेने की खुशी झलक रही थी। कुछ छात्रों के विचार निम्नलिखित हैं:

"मुझे समूह गतिविधि में मज़ा आता है, जो मैंने सीखा है उसे मैं याद रखूँगी।"
- रेनू XC

"कक्षा में किए गए 6 प्रश्न अब मैं समझ गई हूँ और कभी नहीं भूलूँगी।"
- रितु XC

"मैडम ने हमें क्लास में जो सिखाया वह एक तरह का खेल था। मैंने आनंद लिया और कक्षा में किए गए प्रश्नों को सीखा।"
- निशा XC

"समूह गतिविधि के माध्यम से कक्षा में किए गए विषयों को समझा और सीखा और जाना कि आपस में बातचीत करके अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।"
- बिंदु XC

यह तकनीक उन कक्षाओं के लिए बहुत उपयोगी है जहाँ विद्यार्थियों की संख्या अधिक हो। सामूहिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को एक दूसरे के साथ मिल कर किसी समस्या का हल खोजने में मदद करती हैं। यह उनके बीच नेतृत्व करने की क्षमता ,सहयोग और समन्वय जैसे मूल्यों को सीखने में मदद करती है। सामूहिक गतिविधियों में विद्यार्थी सुरक्षित महसूस करते हैं क्योंकि ऐसी प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने साथियों के साथ मिलकर काम करना सीखते हैं।

वे अपने विचार साझा करने में संकोच नहीं करते। कक्षा के अंदर विद्यार्थियों को व्यस्त रखना और उन्हें सुरक्षित महसूस कराना, न सिर्फ सीखने की प्रक्रिया में मदद करता है बल्कि उन्हें उच्च स्तर की सोच को विकसित करने की दिशा में प्रेरित करता है।

मैं अपनी कक्षा में इस तकनीक द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाने में आनंद का अनुभव करती हूँ और उम्मीद करती हूँ कि आप भी अपनी कक्षा में विद्यार्थियों को समूह में मिलजुल कर सीखने के अवसर उपलब्ध कराते होंगे।

मैं भी English बोलना चाहती हूँ

निरुपमा शर्मा
अध्यापिका, जैतपुर-1
विद्यालय, MCD

मैं English बोलना चाहती हूँ। स्कूल में हम अंगरेज़ी सीखना चाहते हैं। ये विचार मेरी नई कक्षा के लगभग सभी बच्चों के थे।
जब मुझे इस साल नई कक्षा मिली तो बच्चों को समझने के लिए मैंने उन्हें यह लिखकर बताने के लिए कहा कि वे इस वर्ष क्या-क्या सीखना चाहते हैं। मैं जानना चाहती थी कि बच्चों की मुझसे क्या-क्या उम्मीदें हैं। सभी बच्चे अपनी बात बेझिझक लिख पाएँ, इसके लिए मैंने बच्चों को यह साफ़-साफ़ बता दिया था कि मैंने यह सवाल 'अपनी' जानकारी के लिए पूछा है।

सभी बच्चों की इच्छाएँ पढ़ने के बाद मुझे पता लगा कि ज्यादातर बच्चे 'इंग्लिश' पढ़ना, बोलना, उसमें कहानी कहना आदि सीखना चाहते हैं। हैरानी इस बात से हुई कि 100% बच्चों ने 'हिंदी' भाषा चुनकर English सीखने की इच्छा जताई थी जबकि मैंने उन्हें कोई विशेष भाषा में अपनी बात लिखने को नहीं कहा था, बस अपनी इच्छाओं को लिखने के लिए कहा था।

बच्चों की इन इच्छाओं ने मुझे हैरान तो किया ही, साथ ही उनकी शिक्षा की ओर मेरी ज़िम्मेदारियों का रुख थोड़ा बदल भी दिया। जिस भाषा को वे अपनी इच्छाओं को बताने के लिए स्वत: चुन रहे थे, मुझे उसमें उनके विचारों को विस्तृत रूप देने, विचारों की निरंतरता बनाए रखने व शब्द भंडार आदि पर काम करना था ताकि वे अपने विचारों को साझा करने के लिए 'इंग्लिश' भाषा को भी चुनें।

किसी बच्चे के संपूर्ण विकास की बात कही जाए और उसे अपनी मातृभाषा से इतर (अलग) भाषायी माहौल दिया जाए, तो यह संभव नहीं है।

मातृभाषा हिंदी ही हो, यह आवश्यक नहीं है। यह कोई भी भाषा या बोली हो सकती है। मातृभाषा से जुड़ाव जन्म से पहले ही आरंभ हो जाता है। हम सभी के लिए हमारी मातृभाषा मन- मस्तिष्क की पोषक है। मातृभाषा हमें विचार करने की, विचारों को साझा करने की क्षमता देती है। विभिन्न शोधों में बताया गया है कि यदि किसी बच्चे को उसकी मातृभाषा से दूर रखा जाए तो इसका असर उसके मस्तिष्क के विकास पर पड़ता है।

कुछ शोध जो मस्तिष्क और मातृभाषा से जुड़े हैं, उनसे पता चलता है कि एक नवजात शिशु किसी अंजान भाषा के बजाय मातृभाषा को सुनकर ज्यादा प्रतिक्रिया देता है। मातृभाषा की महत्ता को शिक्षा में भी स्थान दिया गया है। 1935 में UNESCO ने प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा के महत्व को बताया, शिक्षा के क्षेत्र में हुए अनेक प्रयोग, शोधकार्यों, शिक्षा संबंधी दस्तावेजों में प्राथमिक स्तर पर मूल रूप से मातृभाषा में शिक्षा देने की बात कई बार कही गई है और अब NEP 2020 में भी आरंभिक कक्षाओं में मातृभाषा में शिक्षा देने पर ज़ोर दिया गया है।

मातृभाषा की महत्ता व बाल विकास में उसकी भूमिका किसी भी भाषा की लोकप्रियता को कम नहीं कर सकती। लेकिन यह भी सच्चाई है कि बच्चे आज अंग्रेज़ी सीखना चाहते हैं। उनके अभिभावक भी उन्हें अंग्रेज़ी सिखवाना चाहते हैं।

मेरे विद्यालय में इस साल लगभग 1000 दाखिले हुए। मैंने पाया कि 'पूरे'100% अभिभावक अपने बच्चों को 'इंग्लिश' माध्यम में दाखिला दिलवाना चाहते हैं। उनकी चिंता बच्चों की 'शिक्षा' नहीं बल्कि उनकी 'अंग्रेज़ी शिक्षा' थी। एक बच्चे की माँ ने कहा था - 'अब मुझे दुख नहीं है कि मेरी बच्ची प्राइवेट स्कूल में नहीं पढ़ पाई क्योंकि अब सरकारी स्कूल में भी 'इंग्लिश' सिखाई जाती है'।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो यह बताते हैं कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बच्चों ने भी हिंदी के साथ अंग्रेज़ी को कई रूपों में अपना लिया है। एक बार कक्षा 4 को एक चित्र पर कुछ वाक्य English में लिखने को कहा गया तो एक बच्चे ने रोमन में हिंदी भाषा में लिखा -One girl tree so rahi thi* ज्यादातर बच्चे whatsapp message करने के लिए रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं।

बच्चे आम बोलचाल में आराम से अंग्रेज़ी शब्दों का उपयोग करते हैं। अब उनकी इच्छा अंग्रेज़ी में आत्मविश्वास से बोलने की है।

बच्चों के जीवन में इंग्लिश भाषा अपना अनूठा स्थान बना रही है। इस लोकप्रियता को देखते हुए और वैश्विकरण की ज़रूरत को देखते हुए MCD के प्रतिभा विद्यालयों को अब पूरी तरह से अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में बदल दिया गया है। दिल्ली सरकार के विद्यालयों में 'प्रोजेक्ट वॉइस' जैसे प्रोग्राम भी इस ज़रूरत को पूरा करते हैं। इसमें एक ओर बच्चों को मंच पर अपने विचार प्रस्तुत करने के भरपूर मौके मिलते हैं, वहीं उनके 'कॉन्फिडेंस' में वृद्धि होती है और उन्हें 'पर्सनालिटी डेवेलप' करने के अवसर भी मिलते हैं। प्रोजेक्ट वॉइस केवल अंग्रेज़ी ही नहीं बल्कि हिंदी में अपनी बात आत्मविश्वास से कहने के कौशलों का विकास करता है।

वहीं 'स्पोकन इंग्लिश प्रोग्राम' सरकारी स्कूल के बच्चों को अंग्रेज़ी में बातचीत करने का विश्व-स्तरीय प्रशिक्षण उपलब्ध करता है। यह कार्यक्रम पिछले कुछ सालों से दिल्ली शिक्षा निदेशालय के सरकारी स्कूलों में सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। सरकारी तौर पर अनेक प्रोग्राम भी चलाए जा रहे हैं जो अध्यापकों के प्रशिक्षण से संबंधित हैं, जिससे इंग्लिश के पठन-पाठन के स्तर में और अधिक सुधार हो सके। अब दिल्ली शिक्षा निदेशालय की इन योजनाओं जैसे प्रयासों की ज़रूरत एमसीडी के स्कूलों में भी महसूस की जा रही है।

मेरी कक्षा में अंग्रेज़ी

FLN में इंग्लिश व हिंदी दोनों को बराबर महत्व दिया गया है। लेखन कौशल व कहानी कथन आदि दोनों भाषाओं में गतिविधियों के माध्यम से करवाया जा रहा है। अपनी कक्षा में मैं बच्चों को मौलिक लेखन के अवसर देती रहती हूँ। सधे हुए विषय जैसे 'किसी राष्ट्रीय त्यौहार/ सामाजिक त्यौहार, भाई के विवाह के लिए पत्र/ बीमारी की छुट्टी के लिए पत्र आदि' विषयों के अलावा मैं बच्चों कुछ इस तरह के विषय देती हूँ जिसमे बच्चे स्वतंत्र रूप से अपने विचार लिख सकें जैसे- 'मुझे डर कब-कब लगता है, मुझे घर में तब अच्छा लगता है जब..., मैंने उसकी मदद तब की थी जब..., मेरे पास 100 रुपए होंगे तो मैं उनसे ....खरीदूँगी क्योंकि...' आदि। सभी बच्चों के लेख दीवार पर प्रदर्शित करने से मेरी कक्षा के सभी विद्यार्थी एक-दूसरे के विचारों को पढ़ पाते हैं। यह प्रदर्शन बच्चों को आत्मविश्वास देता है कि उनकी लिखित बात महत्वपूर्ण है। एक और प्रयास मेरी और से यह होता है कि जब बच्चा स्वयं को एक्सप्रेस करता है- लिखित या मौखिक, तब मैं व्याकरण संबंधी त्रुटियों को नज़रंदाज़ कर, उनके द्वारा प्रयोग की गई शब्दावली, वाक्य संरचना, एक विचार से वे दूसरे विचार पर किस तरह पहुँचे, उनके आत्मविश्वास, कोई अनूठी बात जो उन्होंने लिखी, कोई मौलिक बात जो उन्होंने कही या लिखी, की प्रशंसा करती हूँ। प्रशंसा गुड/ अच्छा/ बहुत अच्छा/ उत्तम प्रयास के अलावा इस तरह से भी करती हूँ जैसे - 'आपने जिस शब्द/ वाक्य/ किस्से का चयन अपनी बात कहने/लिखने के लिए किया, इससे बात पूरी तरह समझ में आ रही है, मुझे आपकी लिखी हुई बात ऐसे लग रही है, जैसे वह घटना मैं खुली आँखों से देख रही हूँ.. आदि। प्रयास, विचार प्रस्तुत करने के आत्मविश्वास की प्रशंसा करती हूँ जिससे उन्हें यह पता लग सके कि अपनी बात कहना कितना महत्वपूर्ण है। इंग्लिश बोलने के प्रयास में हिंदी व इंग्लिश के मिश्रण, अधिक से अधिक इंग्लिश के शब्दों के प्रयोग को बढ़ावा देती हूँ। धीरे-धीरे व्याकरण, स्पेल्लिंग आदि की कमियाँ पठन अनुभव से स्वयं दूर होने लगती हैं। भाषा विचार प्रस्तुत करने के बाधा न होकर एक साधन का कार्य करे, यह मेरा प्रयास रहता है।

पौष्टिक आहार: कुपोषण पर प्रहार

राखी वालिया
GGSSS आज़ादपुर विलेज

पाठकों, आज मैं कुपोषण जागरूकता विषय पर अपने छात्रों के साथ हुए अनुभवों को साझा कर रही हूं।
मैं राखी वालिया, आजादपुर विद्यालय में कार्यरत हूँ और मिनी स्नैक्स ब्रेक को विद्यालय में क्रियान्वित करने की ज़िम्मेदारी मेरे पास है।
मिनी स्नैक्स ब्रेक राउंड के दौरान मैंने पाया कि सीनियर क्लासेज की छात्राएं इस ब्रेक में दिलचस्पी नहीं ले रही थीं। बहुत सोच विचार के बाद मुझे इसका कारण मिला। कारण बहुत स्पष्ट था।
ब्रेकफास्ट के महत्त्व की अज्ञानता , अक्सर भोजन भूल जाना और जागरूक न होना इत्यादि।

एक दिन जब मैं रोज़ाना के दौरे पर क्लासेज में गई तो मैंने पाया कि मिडिल क्लासेज की छात्राओं की अपेक्षा सीनियर क्लासेज की छात्राओं में स्नैक्स ना खाने की गंभीर समस्या थी।

शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार पेरेंटल काउंसलिंग, मॉर्निंग असेंबली में विद्यार्थियों के द्वारा हेल्थी फूड तथा जंक फूड इत्यादि पर कविता वाचन, भाषण और डांस के माध्यम से जागरूक किया जा रहा था। परंतु मन को संतुष्टी नहीं मिल रही थी ।

घर आकर भी मन में यही चल रहा था कि क्या किया जाए कि मेरे सभी बच्चे इस प्लान का पूरी तरह से हिस्सा बनें।

मैं सोशल मीडिया चला रही थी कि अचानक एक फिल्म का गाना चला "भूख लगी, भूख लगी ज़ोरों की भूख लगी" बस फिर क्या था मुझे समाधान मिल गया था।

चूँकि इस ब्रेक के लिए कोई अलार्म नहीं था तो कैसे स्टूडेंट्स और टीचर्स को पता चले कि "अब वक्त है मिनी स्नैक्स ब्रेक का"

मिनी स्नैक ब्रेक में कुछ महत्वपूर्ण नवचार किए गए-

1."भूख लगी" हमारा प्रारंभिक गाना बना।

2.जिन छात्राओं का जन्मदिन होता है, उनके लिए हम जन्मदिन गीत गाते हैं, जिसमें भोजन करना अच्छी आदत होती है, यह भी बताया जाता है।

इस तरह अब हमारी सभी छात्राएँ अपनी सेहत में सुधार कर रही हैं। अब जब मैं राउंड पर जाती हूँ तो मेरे कानों में आवाज आती है, मैम आज का सॉन्ग बहुत अच्छा था। हमने हँसते गाते और नाचते हुए मिनी स्नैक ब्रेक किया । मन को बहुत संतुष्टि मिलती है ।

स्कूल कैंपस में सभी छात्राएँ मॉर्निंग असेंबली में मिनी स्नैक्स ब्रेक पर कविता बोलने और ऑफिस से अनाउंस करने में बेहद दिलचस्पी लेती हैं।

यहाँ तक कि मेरे साथ आठवी की छात्राएँ राउंड पर जाने की इच्छा भी रखती हैं। मेरे लिए यह मेरे शिक्षण करियर का अत्यंत संतोष. जनक अनुभव हैं।

मैंने निश्चय किया कि यही होगी हमारी टैग लाइन। मैंने 7thA की छात्रा राखी को यह टैग लाइन सिखाई। उसकी मधुर आवाज़ सुनकर सभी छात्राएँ शामिल होने लगीं।

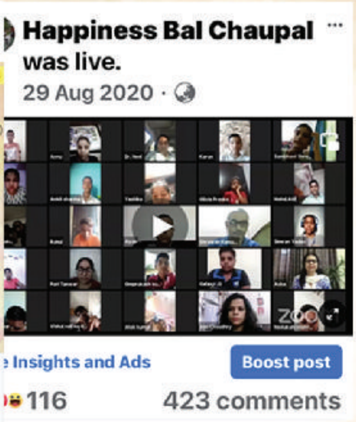

हैपीनेस बालचौपाल: ख़ुशी की क्लास

एक संस्मरण!

सुमन रेलन
पी. जी. टी. इंग्लिश
GGSSS वसंतकुंज बी-1

आपदाएँ और विपत्तियाँ, जीवन को प्रभावित करती हैं, यह मानव जीवन का एक परम सत्य है। लेकिन, मनुष्य का एक गुण और भी है, विपत्ति से निखर कर बाहर आना। और कभी कभी इस के परिणाम अपेक्षा से अधिक और दूरगामी होते हैं।

दुनियाभर में कोविड काल को एक आपदा के रूप में देखा गया, और स्कूल और शिक्षा इस समय सब से ज्यादा गौण हो गये। लेकिन शिक्षाविद इस समय भी निष्क्रिय नहीं थे, अपनी अपनी समझ से वे सब एक ऐसी दुनिया रच रहे थे, जिस से वे अपने विद्यार्थियों से जल्दी से जल्दी वापस जुड़ पायें। टेक्नोलॉजी ने इसमें उनका भरपूर साथ दिया। जल्दी ही हमारे टीचर्स, स्टूडेंट्स और हमारी कक्षाएँ Techenabled होने लगीं। एक पॉजिटिव माइंडसेट और नया सीखने की इच्छाशक्ति ने सोने पर सुहागे का काम किया। टीचर्स अपने इस नये हुनर से गौरव का और विद्यार्थी अपने आकाश का विस्तार होता हुआ अनुभव कर रहे थे।

लेकिन, आज इसका ज़िक्र करने का प्रयोजन कुछ और है। कोविड का डर जैसे जैसे कुछ कम हुआ, ज़िंदगी वापस अपने ढर्रे पर लौटने लगी। आपदा के समय के प्रयोग समय के साथ धूमिल पड़ने लगे। सिलेबस और एग्जाम फिर से चिंता का विषय थे।

कक्षा में टेक्नोलॉजी का प्रयोग समयानुकूल और सार्थक था, यहाँ टीचर्स और स्टूडेंट्स, दोनों ही लर्नर्स थे। लेकिन लर्नर से ज्यादा फोकस रिजल्ट पर था तो यह संभावित ही था, कि सभी अपने कम्फर्ट ज़ोन में लौट जायें।

इस जर्नी में हमने क्या खोया और क्या पाया, इस की समीक्षा भी होनी ही चाहिये, तो ऐसे एक अभिनव प्रयोग का मैं यहाँ ज़िक्र करना चाहूँगी, जिसे हम साथ लेकर आज भी चलना चाहेंगे।

18 मार्च, 2020 का ऐतिहासिक दिन। अचानक देश में लॉकडाउन की घोषणा। आशंका और अनिश्चितता के बीच महामारी से जूझने की आंतरिक शक्ति संजोते सब लोग जहाँ एक ओर स्वयं को नयी परिस्थितियों में ढालने की जद्दोजहद में लगे थे, वहीं एजुकेशन फ्रंट पर एक नयी चुनौती थी, अपने स्टूडेंट्स से जुड़े रहने की चुनौती। लेकिन अध्यापक तो जीव ही ऐसा है, हर चुनौती का मुक़ाबला करने के लिए कटिबद्ध। आनन-फ़ानन में वट्स ऐप ग्रूप्स बन गए। हमारे अध्यापकों ने समय की माँग को पहचानते हुए ना सिर्फ़ नयी तकनीक को अपना लिया बल्कि स्वयं ही अपने स्टूडेंट्स से जुड़ने के नित नए प्रयोग भी करने लगे।

अपने विद्यार्थियों से जुड़ने के साथ साथ यह भी महत्वपूर्ण था कि चर्चा सार्थक हो। सिलेबस से इतर हो और महामारी से उत्पन्न हुए तनाव को कम करने में सहायक हो!
ऐसे समय में कुछ मेंटॉर साथियों ने भी अपने समुदाय के साथ जुड़ने की छोटी सी कोशिश की! विद्यालय के हैपीनेस कोऑर्डिनेटर्ज़ और कुछ स्टूडेंट्स को जोड़ कर क्यूँ ना एक हैपीनेस क्लास चलायी जाए, साथियों के साथ चर्चा में यह एक विचार आया!

हैपीनेस कलासेज़ अभी तीन साल से ही दिल्ली के सरकारी स्कूल्ज़ में शुरु हुई थी! आशा गाबा जी, हैप्पीनेस कॉर्डिनेटर, की विषय को ले कर समझ भी थी और गहरी पैठ भी, और यह विश्वास भी कि यह कांटेंट इन विपरीत परिस्थितियों में विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकता है।

जल्दी ही एक टीम बनायी गयी! जिस में टेक्निकल सपोर्ट के लिए रोहित उपाध्याय, चंदन झा ; कांटेंट क्रीएशन के लिए डा. नील कमल मिश्रा, रविंद्र कुमार, अनु चौधरी और सुनीता चौहान उपलब्धता के अनुसार अपना सहयोग देते रहे! सुनीता जैन दीदी व श्रवण भैया एक्स्पर्ट ओपिनियन के लिए मार्गदर्शक की तरह साथ रहे! अब बारी थी स्टूडेंट्स तक पहुँचने की। सुझाव आया कि कुछ स्कूल टीचर्स़ और स्टूडेंट्स जो वट्सऐप ग्रुप में सक्रिय हैं, उनका एक अलग ग्रुप बना कर चर्चा रूप में शुरुआत की जाए।

यहीं से शुरुआत हुई हैपीनेस बाल चौपाल की। कुछ चुने हुए स्कूल्स के स्टूडेंट्स को इन्वाइट भेजा गया! आशा के अनुरूप एक दिन में ही 250 स्टूडेंट्स हमारे साथ थे। लगभग 500 विद्यार्थियों के दो अलग ग्रूप्स बनाए गए!

"आप के लिए हैपीनेस के मायने क्या हैं?" से शुरु हुई यह चर्चा धीरे धीरे हैपीनेस के आधारभूत मूल्यों जैसे स्नेह, ममता, कृतज्ञता, सम्मान और विश्वास को आधार बनाते हुए आगे बढ़ी! यह वट्सऐप ग्रूप शाम 7 बजे से 9 बजे तक ऐक्टिव रखा जाता था! शुरुआत के लिए एक कहानी सुनाते हुए कुछ सवाल लिखे जाते थे, जिन का स्टूडेंट्स अपनी समझ के अनुसार जवाब देते थे। मज़े की बात यह थी कि ज्यादातर जवाब मौलिक ही होते थे!

और अपने दूसरे साथियों के जवाब पढ़ कर वे स्वयं ही उचित निष्कर्ष पर भी पहुँच जाते थे! छोटी मोटी नोक झोंक भी चलती रहती थी। परिवार बड़ा था और ज़िम्मेदारी भी। धीरे धीरे यहाँ ज़रूरत महसूस हुई एक्स्पर्ट ओपिनियन की और सोचा गया, रूबरू बात करना भी ज़रूरी है। सुझाव आया क्यों ना ज़ूम क्लास भी ली जाएँ! शनिवार का दिन निश्चित हुआ और लिंक्स बनाए गए! नाम रखा गया, खुशी की क्लास।

स्कूल हैपीनेस कोऑर्डिनेटर्ज़ को साथ लिया गया। मांडी कन्या विद्यालय से नूपुर तिवारी का नाम यहाँ विशेष रूप से उलेखनीय है, जो इन कोशिशों को अलग ही आयाम पर ले गयीं। एक्सपर्ट सलाह के लिए हैपीनेस कोर टीम से सुनीता दीदी और श्रवण भैया को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया! हमारी खुशी की क्लास में पहले ही दिन 100 स्टूडेंट्स थे और उतने ही वेटिंग एरिया में! सब साथ जुड़ पाएँ, तो टेक्निकल टीम से रोहित उपाध्याय ने फ़ेस्बुक लाइव का सुझाव दिया। हैपीनेस बालचौपाल नाम से एक वट्सऐप पेज बनाया गया जहाँ से इनका लाइव प्रसारण किया गया। जल्दी ही पेरेंट्स भी इन चर्चाओं में जुड़ने लगे और कारवाँ बनता गया।

वट्सऐप तो डेली डोज़ थे। कभी चर्चा अगर अलग दिशा में भटक भी गयी तो सब साथी थे ही, प्यार से उस को सही दिशा पर ले आने को! अनु चौधरी अपने अनोखे अन्दाज़ में कभी स्माइली भेज कर और कभी औडियो से लगातार उन का उत्साहवर्धन करती रहीं! दिशा निर्देशों को अपनी आवाज़ में रिकॉर्ड कर के भेजना उनका एक अनूठा प्रयोग था। ऐसी एक घटना जिस में स्टूडेंट्स कुछ अलग ही दिशा में जाते दिखे, याद आ रही है! चंदन झा ने तुरंत उस का संज्ञान लेते हुए एक क्विज़ बनाया और पोस्ट किया! अचानक भेजे गए क्विज़ज़ ऐप के लिंक में स्टूडेंट्स व्यस्त हो गए और अपना स्कोर साझा करने लगे! फिर तो रोज़ ही चंदन सर और उनके क्विज़ का इंतज़ार होने लगा!
एक महीने किसी एक मूल्य पर चर्चा होने के बाद स्टूडेंट्स को किसी कविता, कहानी या चित्र के माध्यम से अभिव्यक्त करने को कहा

Every evening I enter in a new world

Where I get to know about the importance of values

Where I get to know about the importance of gratitude

Where I get to know about the importance of respecting others

Where I get to know about everyone's feelings and opinions

Where I get to know about writing skills

Where I get to know stories that inspires me

Where I get to know about people's life experiences andnlearn a lot from them

Where I get to know about speaking and reading skills.

Where I get to develop my confidence level.

And still there's a lot to explore in this new world

And this new world is our one and only happiness class.

Which enables me to do all these things

Welcome to this new world of happiness!!)

By Shreya Kaushik
Skv Aya Nagar 8A

Live Streaming of Happiness Bal Chaupal की ख़ुशी की क्लास में।
दिनांक: 12.09.2020
दिन: शनिवार
समय: 4 बजे

आइए गा ज़रूर!

SAT, 12 SEP 2020
ख़ुशी की क्लास
Online event

जाता। जिस में स्टूडेंट्स ने बढ़चढ़ कर भाग लिया! यहाँतक कि कुछ छात्र अपने स्वयं के क्विज़ लिंक्स भी बनाने लगे। यहाँ एक कविता साझा कर रही हूँ, जिस में एक छात्रा कविता के माध्यम से कृतज्ञता मूल्य का वर्णन कर रही हैं!

श्रेया कौशिक आज कक्षा 10 की छात्रा हैं, और अपनी हैपीनेस जर्नी के साथ साथ वह और उसके सहपाठी आज कई ऑनलाइन कोर्सेज का प्रयोग करते हुए धीरे धीरे अपने सपनों को पूरा कर रहे हैं। ये सब एक वेब बेस्ड ppt के ज़रिये कम्युनिटी सेवाएँ भी प्रदान करते हैं। समयानुसार इन कक्षाओं को तो उनके अपने स्कूल के हैपीनेस कोऑर्डिनेटर्ज़ को सौंप दिया गया था, जो आज भी इन कक्षाओं को ले रहे हैं! लेकिन यह, और इन जैसे अनेक प्रयोग आज भी हमारे लिए "लर्निंग टूल्स" साबित हो सकते हैं। ज़रूरत है, इन सब को डॉक्यूमेंट करने की।

मिलते हैं, अगले अंक में कुछ और साथियों के अभिनव प्रयोग के साथ।

गणितीय चर्चा

ज्योति धींगरा,टी जी टी गणित
SKV, C- BLOCK, सुल्तानपुरी

मैं गणित में कुशल नहीं हूँ, लेकिन गणित पढ़ने - पढ़ाने के नए-नए तरीकों की उत्सुकता से खोज करती हूँ।

गणित को अक्सर एक ऐसे विषय के रूप में माना जाता है जिसमें रट्टा मारने और प्रश्न हल करने के कौशल की आवश्यकता होती है। 'वास्तव में गणित भी अपने आप में एक भाषा है', हमें इस विचार की पड़ताल करने का अवसर मिला जब हमने संरक्षक शिक्षकों के रूप में दिल्ली में एससीईआरटी द्वारा आयोजित 'अविष्कार' की दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया। 'आविष्कार' शिक्षकों और छात्रों के साथ स्कूलों में विज्ञान और गणित की पढ़ाई के तरीके की फिर से कल्पना करने और इसे बदलने के लिए काम करता है। 'आविष्कार पालमपुर' की गणित कार्यशाला के उन दो दिनों में मैंने गणित की एक भाषा के रूप में समझ बनाई , ऐसा लगा कि काश हमें शुरू से ही ऐसी गणित सिखाई जाती, तो शायद आज लोग यह न कहते कि गणित हमारी पहुँच में नहीं है। गणित की समझ में विषयवस्तु नहीं बल्कि इसके सीखने की प्रक्रिया मायने रखती है। इसका मतलब यह कतई नहीं कि हमें बहुत सारे TLMs का इस्तेमाल करना है।
इन सब का एक हल जो मुझे मिला वह था गणितीय चर्चा - गणित की कक्षा को गणित पर ऐसी चर्चा के साथ शुरू करना जो किसी भी सदस्य द्वारा शुरू की जा सकती है। संख्याओं से लेकर बीजगणित तक, हम सभी बातों पर चर्चा कर सकते हैं व सोच का पता लगाते हैं, जिससे निष्कर्ष घंटों, दिनों, यहाँ तक कि हफ्तों, महीनों तक हमारे मस्तिष्क में छप जाए। चर्चा के अपने नियम भी होंगे जैसे -

- पेन पेपर का प्रयोग नहीं करना।
- ज़रा रुकिए व सोचिए।
- अपने उत्तर तब तक अपने पास रखें। (उत्तर तैयार होने पर अपने सीने के पास रखिए।)
- जब आपसे पूछा तभी उत्तर दें।

चर्चा का एक उदाहरण देख सकते हैं -

एक साधारण सा दिखने वाला यह चित्र और उससे भी साधारण सा पूछे जाना वाला यह प्रश्न इस चित्र में कितने बिंदु हैं? (चित्र एक बार दिखा कर हटाया जा सकता है।)

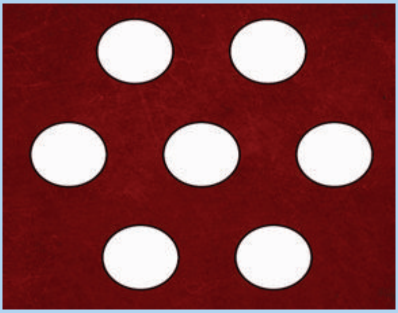

उत्तर तो 7 है परन्तु उसके पीछे की प्रक्रिया देखिए जो बच्चों के दिमाग में चली व शिक्षक द्वारा ब्लैक बोर्ड पर दर्शाई गई (visualization of metacognition process)

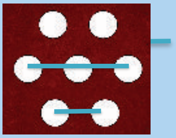

2+3+3 =7

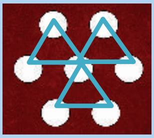

3+3+3-2=7

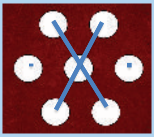

5+1+1 =7

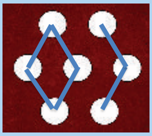

4+3=7

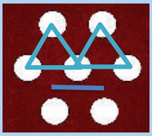

3+3-1+2=7

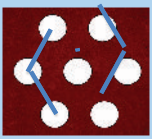

3+1+3 =7

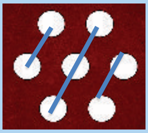

2+3+2 =7

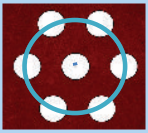

6+1=7

"जमा करने की सोच को देखा भी जा सकता है" शायद यह वह सुंदरता है जो मैंने देखी है।

परन्तु इसके लिए जरूरी है शिक्षक द्वारा पूछे जाने प्रश्नों का निर्माण व शिक्षक की प्रतिक्रिया। प्रश्न सरल, छोटे छोटे व छात्रों के स्तरानुसार हो। जैसे-

आपने जो सोचा क्या आप उसे बता (explain) सकते हैं?

आपका यह उत्तर कैसे आया?

आपने इन्हें कैसे गिना ?

क्या किसी का कोई अन्य उत्तर आया ?

इसका उद्देश्य प्रत्येक बच्चे को एक सुरक्षित स्थान प्रदान करना है, चर्चा का उद्देश्य कभी भी सही उत्तर नहीं होता है, यह छात्रों को उनकी सोच को प्रकट करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास है। शिक्षक का तटस्थ व्यवहार दिखाना आवश्यक है, न सही उत्तर पर उत्साहित हो और न ही गलत उत्तर पर हतोत्साहित, सभी प्रतिक्रियाओं को स्वीकार करें।

मैंने प्रयास किया की गणित चर्चा हमारी दिनचर्या का अभिन्न अंग बन जाए। अपने मेंटी स्कूल की ART मीटिंग में इसे ले जाने से शुरुआत हुई।

शिक्षकों द्वारा सहमति बनी कि इससे कक्षा में छात्रों का आलोचनात्मक रूप से सोचना शुरू होगा और बिना किसी डर और हिचकिचाहट के सवाल करना, गणित के प्रति रुझान व रुचि उत्पन्न होगी।

चर्चा की इस संस्कृति को हमें कक्षा के बाहर भी विस्तारित करना होगा। अगर कोई शिक्षक सामुदायिक मध्याह्न भोजन में गणितीय चर्चा लेकर आए तो इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

ध्यान रहे शिक्षक-नेतृत्व का अर्थ केवल शिक्षक-वार्ता नहीं है। गणितीय चर्चा शिक्षण अधिगम की कमी (gap) को दूर करने का एक उपाय है क्योंकि यह छात्रों को यह देखने का मौका देता है कि वे सोच कैसे रहे हैं और साथ ही साथ यह विद्यार्थियों को एक लोकतांत्रिक सीखने का माहौल देता है। छात्र गलत होने पर भी आनंद लेना शुरू कर देते हैं जो मेरे लिए चर्चा की सुंदरता है। मुझे विश्वास है कि हम छात्रों के साथ कैसी चर्चा कर रहे हैं इस पर फोकस करें तो कैसे किसी को गणित से प्यार नहीं हो सकता ।

आविष्कार में मैंने जो कुछ सीखा है, वह केवल मेरे लिए नहीं है बल्कि मेरे साथियों और छात्रों के साथ साझा करने के लिए भी बहुत आवश्यक है, एक गणित संरक्षक के रूप में, मैं इस मिशन पर हूँ कि मैथ्स चर्चा को सभी के लिए कैसे सुलभ बनाया जाए?

अर्चना वर्मा, टी जी टी अंग्रेजी
Govt. Co Ed, Sr. Sec School
वेस्ट विनोद नगर

छोटा प्रयास बड़ा आकाश

मानीय डायरेक्टर (शिक्षा) श्री हिमांशु गुप्ता जी ने हाल ही अपने आकस्मिक विद्यालय निरीक्षण के दौरान पाया कि बच्चे गणित से लगभग भाग रहे हैं। यह एक बहुत ही गंभीर चिंतन का विषय था। उन्होंने विद्यालयों में 'मिशन मैथ्स' अभियान चलाया। अभियान के तहत विद्यालय में बच्चों को बेसिक गणित के कौशल सिखाए गए। इसी से जुड़ती कड़ी में उन्होंने इच्छा जाहिर की कि अध्यापकों में गणित की सहायक सामग्री की प्रतियोगिता होनी चाहिए ।

ब्लॉक रिसोर्स पर्सन श्रीमती अमिता शर्मा, मेंटोर छवि गुप्ता और हर्ष भारद्वाज ने इसे गंभीरता से लिया और पूर्वी दिल्ली के स्कूलों में यह प्रतियोगिता आयोजित कराई। जज के रूप में प्रधानाचार्य सतीश कुमार खन्ना (झील खुरंजा) और श्रीमान राजेंद्र गोयल (एकेडमिक कोऑर्डिनेटर) को आमंत्रित किया। उन्हें यह प्रयास इतना पसंद आया कि उन्होंने (डीडी ईस्ट) श्रीमान मोहम्मद जावेद कुंवर जी से अनुमति लेकर, ओनरशिप लेते हुए प्रतियोगिता को जिला स्तर पर आयोजित किया।

साथ ही सहायक सामग्री एग्जीबीशन का आयोजन पूर्वी दिल्ली के विद्यालय आई पी एक्सटेंशन में किया। इस सहायक सामग्री निर्माण प्रदर्शनी के अवलोकन के लिए सभी विद्यालयों के गणित के अध्यापकों का आना सुनिश्चित किया गया।

इस प्रदर्शनी को देखने माननीय डायरेक्टर (शिक्षा) श्री हिमांशु गुप्ता जी, कैंब्रिज डायरेक्टर टिम ओट्स, केरल डेलिगेट्स, डी डी ई (ईस्ट) मोहम्मद जावेद उमर , डी डी ई (ज़ोन दो) पी के त्यागी, मेंटल मैथ्स इंचार्ज श्री रवि चौहान (विद्यालय प्रमुख शकरपुर नंबर दो) और अन्य विद्यालय प्रमुख भी आए।

सबने प्रदर्शनी की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया कि इसी तरह के कार्य करते रहें। जिन अनुभवी अध्यापकों ने स्वयं सहायक सामग्री तैयार की थी, जब उन्होंने दूसरों की सहायक सामग्री का अवलोकन किया तो वे भी विस्मित हुए बिना नहीं रह सके। उनसे बातचीत करने पर उन्होंने यह कहा कि यहाँ पर आने के बाद विभिन्न तरह की शिक्षण सहायक सामग्री देखने के पश्चात उनके दिमाग की खिड़कियाँ खुली हैं । वे प्रोत्साहित हुए हैं कि अब और भी अच्छी तरह की सहायक सामग्री तैयार करेंगे और विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के साथ इस्तेमाल करेंगे। यह भी पाया गया कि जो गणित के अध्यापक अवलोकन हेतु आए, उन्हें भी यह प्रयास पसंद आया है। काफ़ी अध्यापक मोबाइल कैमरे से बहुत सारी फोटो इस वादे के साथ खींचकर ले गए हैं कि अब वे भी समय मिलते ही सहायक सामग्री बनाएँगे और विद्यार्थियों के साथ उनका प्रयोग करेंगे।

मैंने भी अपने मैंटी स्कूलों में गणित के अध्यापकों को सहायक सामग्री तैयार करने हेतु प्रोत्साहित किया । लगातार प्रोत्साहित व प्रयास करने पर सभी ने शिक्षण सामग्री बनाकर पूर्वी दिल्ली जिले में आयोजित प्रदर्शनी में प्रदर्शित की । यहाँ श्रीमान कृष्ण कुमार तिवारी जी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उसी प्रदर्शनी के उत्तम प्रयासों को देखते हुए सभी गणित के अध्यापकों को प्रोत्साहित करने हेतु आई.पी.एक्सटेंशन विद्यालय में सामूहिक प्रदर्शनी लगाई गई जहाँ पर डायरेक्टर (एजुकेशन) श्री हिमांशु गुप्ता व कैंब्रिज डायरेक्टर टिम ओट्स जी अपना समय निकाल कर इस प्रदर्शनी का अवलोकन करने आए और बहुत हर्षित हुए । उन्होंने माना कि इस तरह के प्रयासों से गणित के प्रति जो विद्यार्थियों का भय है वह धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा। इसी सिलसिले में प्रदर्शनी को स्टेट लेवल पर आयोजित किया गया जहाँ श्री कृष्ण कुमार तिवारी जी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया । इस छोटी-सी यात्रा के दौरान श्री कृष्ण कुमार तिवारी जी ने स्वयं को बहुत गौरवान्वित महसूस किया। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे उन्होंने किसी अलग ही युग में प्रवेश किया है जहाँ विभिन्न स्तर के समझ वाले लोग अपनी समझ से इतने उत्तम प्रयोग गणित में करने को तैयार हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कि इस तरह की शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण कार्य ने अध्यापकों के मस्तिष्क की खिड़की खोलने का प्रयास किया है जिसके द्वारा बच्चों को अधिक से अधिक अधिगम करा सकते हैं।

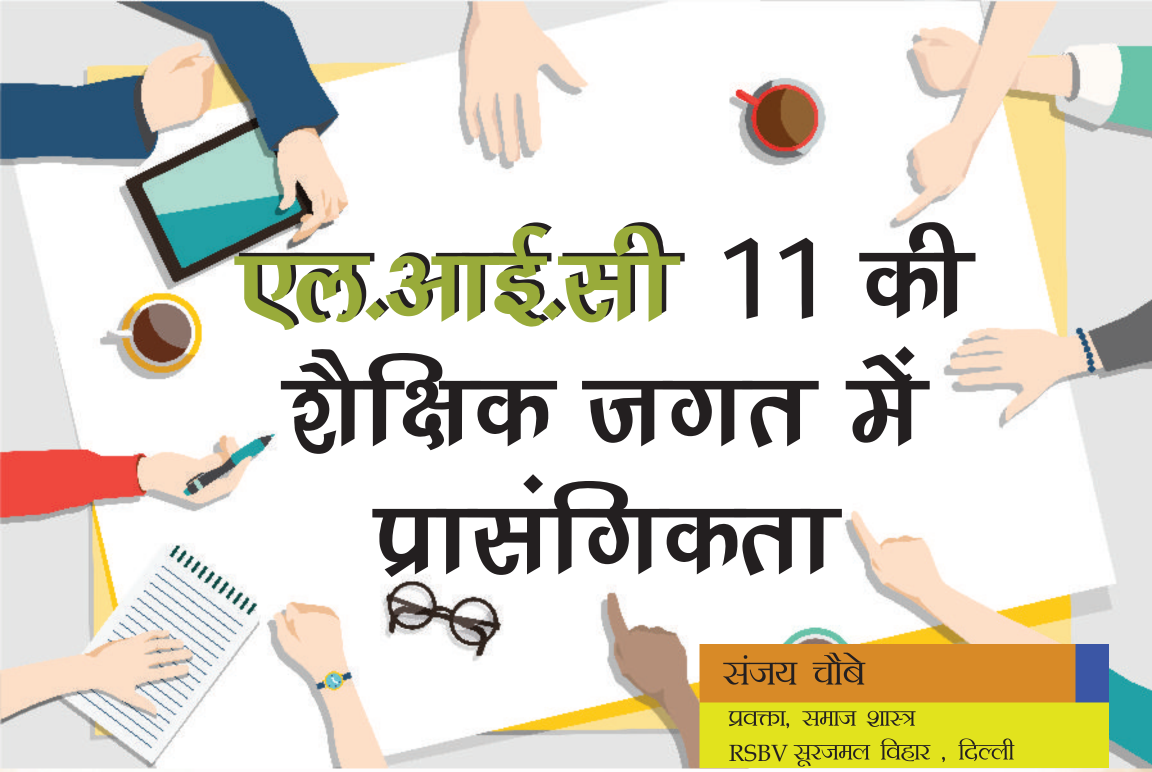

एल.आई.सी 11 की शैक्षिक जगत में प्रासंगिकता

संजय चौबे
प्रवक्ता, समाज शास्त्र
RSBV सूरजमल विहार , दिल्ली

दिल्ली शिक्षा में नवाचार और नवीन इकाइयों के प्रयोग की जब बात आती है तो एल.आई.सी की चर्चा किए बिना पूर्णता नहीं आ पाती है। हम जब कभी अपनी ए.आर.टी. की मीटिंग में एल.आई.सी की बात करते हैं तो हँसी-हँसी में एल.आई.सी को हम लोग 'लाइफ इंश्योरेंस ऑफ इंडिया' के रूप में कहकर अकसर हँसते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि शायद इस हँसी में भी एक गहरा राज़ छिपा है क्योंकि वास्तव में एल.आई.सी हमारी शिक्षा प्रणाली की जीवन रेखा है।

एल.आई.सी की जब बात की जाती है तो हमारे दिल्ली के शिक्षकगण इससे भली-भाँति परिचित हैं कि यह लर्निंग इम्प्रूवमेंट साइकल से संबंधित है, यानी शिक्षा के स्तर (लर्निंग लेवल) व शैक्षणिक तरीकों में कैसे सुधार किया जाए, कौन-कौन से तरीके अपनाए जाएँ और कौन-कौन से नवाचारों का उपयोग किया जाए जिससे अपनी कक्षा को रुचिपूर्ण बनाते हुए बच्चों की सक्रिय सहभागिता से शैक्षणिक कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया जा सके।

एल.आई.सी के संदर्भ में मेरा यह विचार रहा है कि यह हम सबको एक तरह से प्रेरित करती है कि हमारे जो शिक्षक साथी हैं, वे अपनी 'पेडागॉजी' की विधियों को ध्यान में रखकर उसे वर्तमान से जोड़ें और 'ब्लेंडेड लर्निंग एप्रोच' पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करें, यानी अब ऑनलाइन- ऑफलाइन मोड, दोनों का संपूर्ण प्रयोग कर हमें अपने शिक्षण कार्य को पूरा करना है।

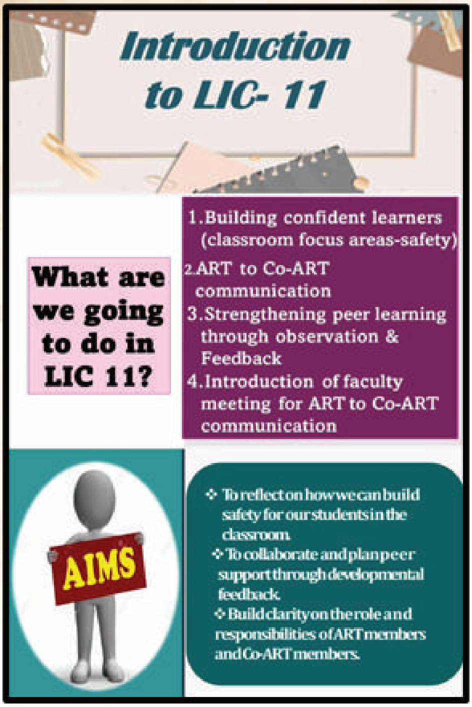

दिल्ली शिक्षा निदेशालय के तहत लाई गई लर्निंग इम्प्रूवमेंट साइकल (एल.आई.सी) का लक्ष्य शुरू से ही दिल्ली के शिक्षकों को सशक्त करना है।

इसका लक्ष्य एक मज़बूत वैज्ञानिक सोच वाला, तकनीकी रूप से सशक्त शिक्षक बनाना रहा है ताकि वह अपनी कक्षा को और अपने बच्चों को अधिक सशक्त रूप से उभारकर ला पाए; क्योंकि यदि शिक्षक सशक्त है तभी तो शैक्षिक प्रणाली भी सशक्त होगी। इसी से कक्षा का वातावरण भी बेहतर होगा और हमारी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य- 'सर्वांगीण विकास' भी ज़मीनी रूप से साकार होगा।

इसमें एल.आई.सी के माध्यम से दिल्ली सरकार का यह प्रयास है कि सभी शिक्षकगण नई-नई तकनीकों से खुद को अद्यतन रखें और इसका कक्षा में प्रयोग करें।

इसी संदर्भ में हमारी एल.आई.सी 11 में 'बिल्डिंग कॉन्फिडेंट लर्नर' (आत्म-विश्वासी शिक्षार्थी का निर्माण) की बात कही गई है। हमारे विद्यार्थी आत्मविश्वास से परिपूर्ण और भय से मुक्त होने चाहिए, और इसके लिए तीन चीज़ों पर विशेष बल दिया गया है - सेफ्टी (सुरक्षा), इनगेजमेंट (संलग्नता) और सेल्फ-एस्टीम (आत्मसम्मान)। अगर ये तीन मूल्य हम अपने बच्चों को दे पाते हैं और ऐसे माहौल का निर्माण कर पाते हैं, तो बच्चा निश्चित रूप से एक अच्छा इनसान बन सकता है और हम जो शैक्षिक बातें सिखाना चाहते हैं, उन्हें भी वह अच्छे तरीके से सीखकर अपने व्यावहारिक जीवन में प्रयोग कर सकता है। इन तीनों थीम की प्रासंगिकता को और सफलता को नापने के लिए आवश्यक है कि हम इन्हें सफलता के मानदंड या सक्सेस क्राइटेरिया के आधार पर भी नापें जिससे हम इसकी सफलता का सही आकलन कर सकें।

कभी-कभी कुछ पक्षों की ओर से ये बातें भी सुनने को आती हैं कि इसमें नवीनता कहाँ है या इसमें क्या नई बातें हैं।

इस संदर्भ में यह समझना आवश्यक है कि भले ही कुछ बातें पहले से भी चली आ रही है, परंतु अब तक ये बातें व्यावहारिक रूप से विद्यार्थियों तक नहीं पहुँच पाती थी। एल.आई.सी के माध्यम से इन्ही बातों को नए तरीके से प्रस्तुत करना, कक्षा तक लेकर जाना और बाल केंद्रित पहलुओं पर ध्यान देते हुए शिक्षा के उद्देश्य को साकार करना सफल हो पाया है। इसीलिए आवश्यक है कि पहले शिक्षक स्वयं सारी ज़रूरी बातें समझें और फिर उन्हें अपने क्लासरूम तक लेकर जाएँ।

जैसे कि अगर एक पायलट को जहाज़ उड़ाना है, तो उसे जहाज़ के सभी तकनीकी पहलुओं के बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी वह उस जहाज़ को अपनी सही मंज़िल पर पहुँचा पाता है। इसीलिए एल.आई.सी के तहत शिक्षकों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है जिससे पहले शिक्षक शैक्षणिक मूल्यों को समझें, खुद में उनका विकास करें और फिर ये मूल्य अपनी कक्षा और अपने विद्यार्थियों तक ले जाएँ। इस तरह के टीचर जब एक अच्छी शैक्षिक सोच के साथ बच्चों के हितों को ध्यान में रखते हुए कक्षा में प्रवेश करते हैं, तो कक्षा का वातावरण वास्तव में सीखने लायक और खुशनुमा हो जाता है।
एल.आई.सी मीटिंग में शिक्षक साथी उनके द्वारा कक्षा में अपनाई गई नई-नई विधियों को भी आपस में साझा करते हैं। जब पीयर-क्लासरूम ऑब्जर्वेशन की बात होती है तब हमें एक नवाचार शिक्षा में आता दिखता है कि अब किसी का अवलोकन उसकी कमियों को निकालने के लिए न होकर उस व्यक्ति से कुछ सीखने के लिए और उसे कुछ सिखाने के लिए होता है। एल.आई.सी 11 के माध्यम से इस तरह के प्रयास भी विद्यालयों में किए जा रहे हैं जिससे विद्यालय का माहौल भी बेहतर हो रहा है। यदि इन सब बातों को सत्र के प्रारंभ से ही कक्षा में लेकर चलें तो हमें परीक्षा परिणाम के बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं होगी और हमारा परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा होगा। जब हम एल.आई.सी 11 के माध्यम से अपने लर्नर को कॉन्फिडेंट बनाकर उनके सेफ्टी, इनगेजमेंट और सेल्फ एस्टीम को सुदृढ़ कर पाते हैं, तो विद्यालय में सीखने-सिखाने, पढ़ने-पढ़ाने का माहौल स्वत: ही अनुकूल हो जाता है ।

लेकिन इसमें विद्यालय की भूमिका के अलावा परिवार की भी अहम भूमिका होती है। इसलिए आवश्यक है कि बच्चों के परिवार में भी उन्हें सशक्त बनाने वाला वातावरण प्रदान किया जाए ताकि बच्चे आत्मविश्वासी शिक्षार्थी बन सकें और परिवार के लोग भी बच्चों में सेफ्टी, सेल्फ -एस्टीम और इंगेजमेंट की बातों को कायम रखने का प्रयास करें।

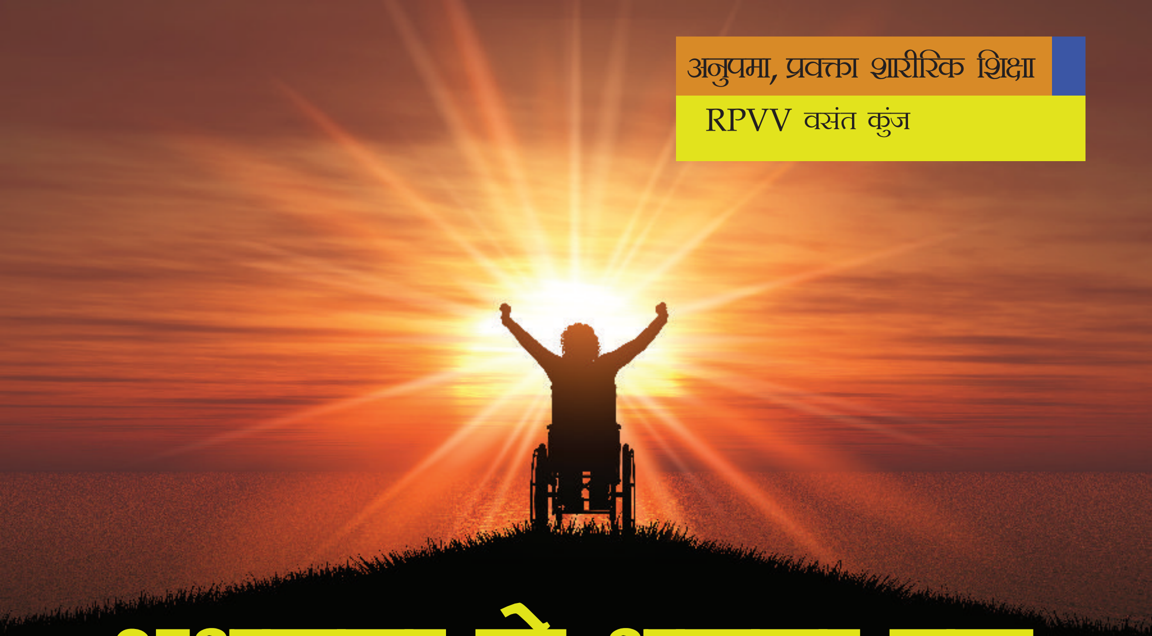

अनुपमा, प्रवक्ता शारीरिक शिक्षा
RPVV वसंत कुंज

अक्षमता से क्षमता एक चुनौतीपूर्ण सफ़र

शिक्षा निदेशालय हमारे विद्यालयों में आयोजित होने वाली अनेक गतिविधियों के विषय में सर्कुलर द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ साझा करता है। इसी श्रृंखला में मेरे पास एक सर्कुलर आया, जिसे पढ़कर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सर्कुलर में लिखा था कि दिव्यांग बच्चों के लिए जोनल, जिला और राज्य स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होना अब अनिवार्य कर दिया गया है। इस दिन का मुझे बेसब्री से इंतजार था क्योंकि मैं इसके महत्व को जानती हूँ। खेलों द्वारा दिव्यांग बच्चों का आत्म सम्मान और उनके अन्दर का आत्मविश्वास काफी बढ़ाया जा सकता है। सर्कुलर पढ़ते-पढ़ते मुझे एक घटना की अचानक याद आ गई, जो कि इस प्रकार थी..........

उस दिन मैं खेल के मैदान का जायजा ले रही थी क्योंकि मेरा पहला दिन था, सरोजनी नगर नंबर 3 के विद्यालय में । उस दिन मैंने पहली बार पुष्पा को देखा था। मैदान के एक कोने से पेड़ के पीछे से किसी के रोने की आवाज सुनी । वहाँ जाकर देखा , एक लड़की और उसकी माँ की दोनों की आंखों में आंसू थे। उन्होंने पूछने पर बताया कि मैं इसका नाम कटवाना चाहती हूँ। तंग आ गई हूँ इस मुसीबत से। रोज़ - रोज काम छोड़कर स्कूल आना पड़ता है, यह कभी भी गिर जाती है, कभी इसका काम पूरा नहीं होता है, कभी ये फेल हो जाती है, आज मैं यह झंझट खत्म कर देती हूँ इसका नाम कटवा देती हूँ।

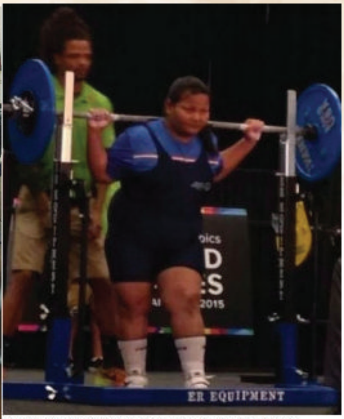

Pushpa Kadayat in action at the Special Olympics.

मैंने पूछा कि नाम कटवा कर क्या कर पाओगी? तो वह बोली कि मैं इसे गाँव में अपने रिश्तेदारों के घर भेज दूँगी उनके काम कर दिया करेगी तो खाना तो कोई ना कोई दे ही देगा।

यह बात सुनकर मेरा मन बहुत दुखी हो गया। मैंने उन्हें समझाया कि आप मुझे 15 से 20 दिन का समय दो हम कुछ सोचते हैं कि इसका क्या करना है। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि अब आपके पास कोई फोन नहीं आएगा। इसके लिए मैं जिम्मेदारी लेती हूँ आप निश्चिंत होकर अपना काम करिए और घर में बच्चों का ध्यान रखिए।

उसी दिन से शुरू हुआ मेरा और पुष्पा का संघर्ष। बहुत सारी चुनौतियाँ थीं, जिनका हमें मिलकर सामना करना था। मैंने सबसे पहले उसकी कक्षा की सहपाठियों से अलग से चर्चा की, फिर स्टाफ रूम में सभी शिक्षकों से जिक्र किया और फिर उसकी माँ और उसकी बहन से विस्तार पूर्वक उसके परिवार के बारे में जाना।

पुष्पा की माँ ने बताया कि कक्षा में अन्य छात्र उसे मोटी कह कर बुलाते हैं और उसका मजाक बनाते हैं। इसके पिता स्कूल कभी नहीं जाते हैं उसे तो शर्म आती है, मोहल्ले में भी वह कभी बाहर नहीं निकलती है क्योंकि उसे खुद बाहर निकलने में शर्म आती है। आपको यह जानकर बड़ी हैरानी होगी कि यह बात किसी को भी नहीं पता थी कि पुष्पा के साथ तीन तीन तरह की अक्षमताएँ हैं, उसे कम दिखाई देता था और उसे सुनाई भी कम देता था, इन दोनों कमियों की वजह से उसका आईक्यू भी कम था।

इस दौरान मैंने विद्यालय की और 9 छात्राओं को पहचाना जिनके साथ अलग अलग तरह की अक्षमताऐं थी। सर्वप्रथम पुष्पा की दोस्ती उन बच्चियों के साथ कराई ,और फिर उन सभी बच्चियों की सामान्य बच्चियों के साथ भी दोस्ती कराई। उसकी शारीरिक योग्यता को बढ़ाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी।

उसका शरीर बिलकुल लचीला नही था, संतुलन की भी अत्यधिक कमी थी। साथ ही शरीर के अंगो में तालमेल बिल्कुल नहीं था। बच्चों से बात करने के बाद पता चला कि पुष्पा को डांस करने का बहुत शौक है। मैंने उसके इसी शौक को हथियार बनाया और रोजाना इस विशेष छात्राओं के लिए स्पोर्ट्स रूम में एक डांस क्लास का आयोजन करवाना शुरू किया।

देखते ही देखते सभी लड़कियों में बहुत ज्यादा लचक, संतुलन और तालमेल बढ़ने लगा।

मैंने पुष्पा की तैयारी लोकल जिम से करवानी आरंभ की और देखते ही देखते पुष्पा पावर लिफ्टिंग में बहुत अच्छा प्रदर्शन करने लगी और 2014 में वह दिन आया जब पुष्पा का नेशनल में सिलेक्शन हुआ और वह पंजाब गई और वहाँ से वह दो मेडल जीतकर लाई एक गोल्ड मेडल और एक सिल्वर। पुष्पा को गोल्ड मेडल के लिए ₹66000 और सिल्वर मेडल के लिए ₹45000 मिले जो कि एक बहुत बड़ी अचीवमेंट थी।

तकरीबन 20 दिन बाद स्पेशल ओलंपिक भारत ने डिस्ट्रिक्ट लेवल पर एथलेटिक्स की प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें पुष्पा ने शॉटपुट में भाग लिया। डिस्ट्रिक्ट लेवल पर आयोजित प्रतिस्पर्धा में तो पुष्पा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, परंतु लगभग एक सप्ताह बाद स्टेट लेवल पर उसे तृतीय स्थान पर ही संतोष करना पड़ा। तृतीय स्थान प्राप्त करने के कारण उसे नेशनल गेम्स के लिए नहीं चुना गया।

लेकिन उसका सपना तो किसी भी तरह से नेशनल गेम्स खेलने का था। और मैं जानती थी अगर वह नेशनल गेम्स में मेडल जीतकर लाती है तो उसको पैसों की मदद हो जाएगी, क्योंकि नेशनल में फर्स्ट, सेकंड, और थर्ड पोजिशन प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को नकद इनाम मिलता है।

मैंने पुष्पा के वजन को ही उसकी ताकत बनाने का सोचा और मैंने उसको पावर लिफ्टिंग के लिए तैयार किया ।यह बहुत मुश्किल काम था परंतु जब ठान लिया तो ठान लिया। पुष्पा की माँ और बहन के साथ बात की और उन दोनों से कहा कि उन्हें बहुत ज्यादा पुष्पा को सपोर्ट करना पड़ेगा।

उसके माँ-बाप दोनों बहुत खुश हुए और पुष्पा की इस उपलब्धि से उन्हें बहुत ज्यादा संबल मिला। अब तो पूरा परिवार, पुष्पा के लिए एकजुट होकर मेरे साथ हो चला।

फिर क्या था? पुष्पा ने वर्ल्ड स्पेशल ओलंपिक में सेलेक्शन के लिए कठोर परिश्रम के साथ प्रयास करना आरम्भ कर दिया। मैंने भी उसके साथ शाम को दो ढाई घंटे प्राइवेट जिम करना शुरू किया। पुष्पा को 115 किलोग्राम वजन को घटाकर 90 किलोग्राम पर लाना था, जिसके लिए हमने उसकी डाइट और

एक्सरसाइज पर विशेष ध्यान दिया। देखते ही देखते पूरा विद्यालय, प्रधानाचार्य टीचर्स और छात्राओं ने पुष्पा को सपोर्ट करना शुरू कर दिया ।

आखिर 2015 में वह दिन आ गया जब पुष्पा का वर्ल्ड स्पेशल ओलंपिक में सिलेक्शन हो गया, पुष्पा को लॉस एंजेल्स, यूएस में खेलने जाना था । वह दिन मेरे लिए बहुत बड़ा दिन था। अब मन में सोचा कि जब हम यहाँ तक पहुँच ही गए है तो क्यों ना इस तरह से तैयारी कराई जाए कि वहाँ जाकर भी वह कुछ मेडल लाए और देश का नाम रोशन करे।

फिर हमने और मेहनत की। मैंने बड़ी ही बेसब्री से उसके रिजल्ट का इंतजार किया 5 दिन मुझे नींद भी नहीं आई। आखिरी दिन सुबह सुबह 5:00 बजे अमेरिका से मेरे पास फोन आया कि "आपकी बेटी ने 4 मेडल जीते हैं मुबारक हो।"

मै खुशी के मारे रो पड़ी क्योंकि पुष्पा ने हमारे विद्यालय का ही नही पूरे देश का नाम रोशन किया था। मुझे उस पर गर्व है। उस दिन मैंने महसूस किया कि सचमुच मैंने अपने टीचिंग प्रोफेशन के साथ आज न्याय किया है।

"हैलो, पुष्पा आज फिर गिर गई उसे आकर ले जाओ" स्कूल से आए दिन आ रहे ऐसे फोनों और दुनिया के तानों से तंग आकर लक्ष्मी (पुष्पा की माँ) 8 साल पहले जिस पुष्पा को स्कूल से नाम कटवा कर गाँव में अपने रिश्तेदारों के पास भेजना चाहती थी, आज उसी पुष्पा ने माँ का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया और आज उसके माता पिता और बहन -भाई सभी पुष्पा की वजह से एक अच्छा जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जी हाँ यह सच्ची कहानी है हमारे दिल्ली के विद्यालय की एक विशेष छात्रा की जिसने अपने परिश्रम और सही मार्गदर्शन से अपनी अक्षमताओं को अपनी क्षमता में बदल दिया। आज 8 साल बाद सोचा कि मैं आपके साथ भी साझा करूँ कि किस तरह से पुष्पा ने संघर्ष से भरा सफर तय किया जो की झोपड़ी से सीधा अमरीका तक जाता है।

यदि इंसान चाहे तो क्या नही कर सकता? चाहे फिर उसके साथ कितनी भी अक्षमताएँ क्यों ना हो। विशेष बच्चों में भी बहुत योग्यताएँ होती है, बस जरूरत है उसे पहचानने की और उसे एक नई दिशा देने की, और यह कार्य हम टीचर्स बहुत बेहतर तरीके से कर सकते हैं।

नागालैंड की यात्रा के अनुभव

मनीष भार्गव, टी जी टी गणित
SBV वेस्ट पटेल नगर

12 मार्च को दिल्ली सरकार की तरफ से एक टीम को नागालैंड की यात्रा पर भेजा जाना था, यह यात्रा शैक्षणिक यात्रा थी। ऐसी यात्राएँ दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग की तरफ से प्रति वर्ष भेजी जाती हैं इनमें शिक्षक और शिक्षा विभाग से जुड़े कुछ अधिकारियों को समूह में भेजकर अन्य राज्यों या अन्य क्षेत्रों का अध्ययन कर उनके द्वारा किए जा रहे शैक्षणिक नवाचार व सामाजिक शैक्षणिक सहभागिता को समझ कर अपने परिवेश के अनुकूल ढाल कर (यदि तार्किक रूप से संभव है या उपयोगी है) अपनाने का प्रयास किया जाता है।

सरकार की ओर से प्रति वर्ष कई शिक्षक साथियों को ऐसी यात्रा में भाग लेने का मौका मिलता है, इस वर्ष इस यात्रा में मुझे जाने का अवसर मिला। हमारा कुल 30 लोगों का समूह था जिसमें शिक्षा विभाग के एडिशनल डायरेक्टर, डिप्टी डायरेक्टर, स्कूल ब्रांच के स्पेशल ऑफिसर, एससीईआरटी के असिस्टेंट प्रोफेसर, कोर एकेडमिक यूनिट के साथी एवं हाल ही में कार्यशील दिल्ली बोर्ड ऑफ सेकेंड्री एजुकेशन एवं अन्य शिक्षक साथियों सहित विविध क्षेत्र के अलग -अलग विषय के लोगों का ग्रुप था।

पहुँचने से पहले ही हम नागालैंड की एक धुँधली तस्वीर (पूर्व में सुने और इंटरनेट पर देखे अनुभव के आधार पर) अपने मन में बनाने लगे थे। नागालैंड की राजधानी कोहिमा पहुँचने पर, बड़े बड़े पहाड़, और नए बनते हुए हाईवे दिखाई दे रहे थे। चारों तरफ लकड़ी के और टीन सेट से बने हुए टेंपरेरी घर दिख रहे थे जो यह सोचने पर मजबूर कर रहे थे कि संसाधन की कमी व्यक्ति को कुशल बनाती है या संसाधन की अधिकता।

हम दिल्ली वालों के लिए ऐसे घर पर्यटन स्थल पर ही दिखाई देते हैं कोहिमा पहुँचने पर शाम के लगभग 5 बज चुके थे और दिन ढलने की ओर था। किताबों में कई बार पढ़ा कि पूर्वी भारत के राज्यों में सूर्य जल्दी अस्त होता है लेकिन देखा पहली बार था। एक शिक्षक जब खुद अनुभव करता है तो वह अनुभव बच्चों तक भी ले जाया जाता है। विद्यालय के अंदर क्लासरूम में बच्चे वही अनुभव कर पाते हैं जो या तो उन्होंने खुद देखा है या जो शिक्षक अपनी आँखों से उन्हें दिखाने में सफल हो सकता है। सिर्फ पढ़ा हुआ या सुना हुआ बच्चों तक ले जाना उतना ही मुश्किल है जितना पानी देखकर प्यास बुझाना होता है।

शाम को 6 बजे से पहले ही अँधेरा हो चुका था। हम अगले दिन कोहिमा के विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के दौरे के लिए तैयार थे। 6,579 वर्ग किलोमीटर में फैला यह छोटा सा राज्य देश के सबसे पूर्वी छोर पर स्थित है, अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित होने व राज्य की कोई स्थानीय भाषा व लिपि न होने के कारण यहाँ के लोगों को एक करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

नागालैंड, पूर्व में असम का क्षेत्र था। 1961 में इसे पृथक राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ एवं 1963 से पूरी तरह स्वतंत्र राज्य के रूप में कार्य करना शुरू किया।

नागालैंड की राजधानी कोहिमा में स्थापित एससीईआरटी के मुख्यालय में यहाँ के इतिहास की झलक मिली। नागालैंड में कुल 16 जिले हैं जिन्हें वहाँ की अलग अलग 16 जनजातियों की बहुलता के आधार पर बाँटा गया है। आधिकारिक रूप से यहाँ की 16 जनजाति, अंगामी, आओ, चखेसेंग, चांग, खियामिनुंगन, कूकी, कोन्याक, कछरी, लोथा, फोम, पोचुरी, रेंग्मा, सूमी, संग्तम,

यिमचुन्ग्रू, जीलियांग हैं।

इन सभी की पृथक बोली है लेकिन कोई लिपि नहीं है इसलिए यह सभी रोमन लिपि का ही उपयोग करते हैं। इसी वजह से नागालैंड की आधिकारिक भाषा भी अंग्रेजी हैं। यहां की पूरी शिक्षा व्यवस्था इसी में है।

अपनी बोलियों को लिखित रूप में लाने का काम सरकार द्वारा किया जा रहा है, फिलहाल अंग्रेजी और हिंदी दोनों ही भाषाएँ राज्य में पढ़ाई जाती हैं।

अंग्रेजी मुख्य भाषा होने के साथ साथ, हिंदी 1 से 8 तक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती हैं। यह सरकारी के साथ साथ निजी विद्यालयों में भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती हैं। यहाँ के निजी विद्यालय एनसीईआरटी की किताबों का ही उपयोग करते हैं।

कोहिमा के प्रमुख व सबसे बड़े निजी विद्यालय नॉर्थफील्ड स्कूल में बच्चों और शिक्षकों से बात कर यहाँ की शिक्षा व्यवस्था को गहराई से समझने का मौका मिला। खेलकूद के जरिए शिक्षा यहाँ हर जगह दिखाई दे रही थी। विद्यालय प्रशासनिक रूप से प्राइमरी विंग, मिडिल विंग, हाई स्कूल में बँटा हुआ था, मिड डे मील की व्यवस्था प्रत्येक सेक्शन में पृथक पृथक थी,सभी क्लास रूम में नागालैंड का आधिकारिक कैलेंडर और उसके साथ टाइम टेबल दिखाई दे रहा था। दीवार के अन्य हिस्सों पर बच्चों द्वारा बनाए हुए पेंटिंग्स और विषयों से संबंधित लेख दिखाई दे रहे थे।

मुख्य विषय के अतिरिक्त संगीत, स्पोर्ट्स कम्प्यूटर जैसे विषयों की पृथक लैब बनी हुई थी जहाँ बच्चों ने अपनी रचनात्मकता से अंग्रेजी और हिंदी में दीवार को सजा रखा था यहाँ के शिक्षक दिल्ली सरकार में चल रहे हैप्पीनेस और EMC जैसे विषयों को जानने की उत्सुकता से दिल्ली में चल रहे नवाचारों को जानना चाहते थे, इस पर सभी से चर्चा हुई और हमने दिल्ली में हो रहे नवाचारों को साझा किया। नागालैंड से 28 किलोमीटर दूर चेचमा में यहाँ की डाइट को देखने का और शिक्षकों से अनुभव साझा करने का मौका मिला, यह नागालैंड की पहली डाइट है जिसे 1990 में स्थापित किया गया था। इस डाइट का थीम है TO LEARN TO CHANGE साथ ही नागालैंड के सबसे बड़े शहर दीमापुर में भी डाइट विजित करने का मौका मिला। प्रकृति और कल्चर वहां के सम्पूर्ण क्रिया कलापों का अभिन्न हिस्सा है। सम्पूर्ण प्रकृति को अपना मानना और अपने पारंपरिक रीति रिवाजों को शिक्षा के जरिए जीवित रखना वहाँ की सबसे बड़ी विशेषता है।

कोहिमा से 20 किलोमीटर आगे ज़खामा सरकारी मिडिल स्कूल विजिट किया, यह लगभग 100 वर्ष पुराना प्राचीन विद्यालय है, संसाधनों की दृष्टि से भले ही यह विकसित न हो लेकिन शिक्षा की दृष्टि से यह पूर्ण विकसित विद्यालय था। यहाँ के बच्चे हिंदी में अच्छे से बातचीत कर सकते थे। उन्होंने हिंदी में गीत गाकर सभी का अभिवादन किया। विद्यालय की सभी दीवारों पर बच्चों के हाथ से बनी कलाकृति या विषय से संबंधित लेख लिखे हुए थे। यहाँ मिड डे मील डिस्ट्रीब्यूट करने के लिए एक प्रथक टीम थी जो विद्यालय से लगे हुए किचन में खाना बनाकर बच्चों को बाँटते थे, मिड डे मील का मेनू लगभग वैसा ही था जैसा दिल्ली के किसी स्कूल में दिखाई देता है। चावल यहाँ की मुख्य फसल होने के कारण सर्वाधिक बच्चे चावल खाते हुए दिखाई दिए।

GMS JAKHAMA विद्यालय के बाहर बने हुए मोनोलिथ (शिला) पर जखामा ग्राम पंचायत और स्कूल मैनेजमेंट कमेटी की तरफ से लिखवाया गया था।

This Monolith is Erected on 10th March 2020 In Honour of the Visionary Teachers] Past and Present who dared to dream-Dream for the welfare & Education of their people

हसनीत कौर

टीचर डेवलपमेंट कॉर्डिनेटर
सर्वोदय कन्या विद्यालय, बुलबुली खाना

मेरा खुद से शिक्षक विकास समन्वयक (टीडीसी) के रूप में साक्षात्कार

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो न केवल ज्ञान का खज़ाना है, बल्कि उद्देश्यों की ऊँचाइयों तक पहुँचने का रास्ता भी है। एक शिक्षक की भूमिका यहाँ विशेष महत्वपूर्ण है, जो न केवल शिक्षा देते हैं, बल्कि उन्हें अपने व्यक्तिगत विकास के लिए भी प्रयोग करते हैं। सही अर्थों में उनकी लर्निंग जर्नी हमेशा जारी रहती है।

इस लेख में, मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से साझा करने जा रही हूँ कि मैंने खुद को टीचर डेवलपमेंट कॉर्डिनेटर (टीडीसी) के रूप में पहचानते हुए शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम कैसे छुए।

यह यात्रा न केवल मेरे व्यक्तिगत विकास का प्रमाण है, बल्कि एक पूरे समुदाय का शिक्षा विकास के प्रति समर्पण और संवेदनशीलता की कहानी है।

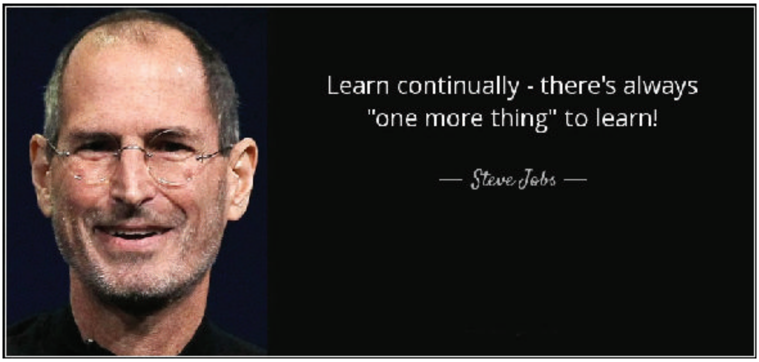

साथ ही अपने स्वयं के विकास का रास्ता भी तलाश सकती हूँ। यह कार्यक्रम हमें विद्यालय कक्षाओं को जीवंत, सक्रिय और प्रभावी

शिक्षा के इस गतिशील परिदृश्य में, एक शिक्षक विकास समन्वयक की भूमिका काफ़ी महत्वपूर्ण है। एक टीडीसी का कार्य शिक्षकों के विकास और प्रभाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो आखिरकार छात्रों को ही लाभ पहुँचाता है।

अब तक का मेरा टीडीसी कार्यक्रम का सफर "हमेशा सीखते रहो" - स्टीव जॉब्स की इस विचारधारा से प्रेरित होकर, मैंने टीडीसी कार्यक्रम में शामिल होने का निर्णय लिया। यह एक सरल यात्रा नहीं थी, क्योंकि वरिष्ठ शिक्षकों को संबोधित करना, उन्हें कार्यक्रम के लक्ष्य और मिशन को समझाना कठिन था। लेकिन, टीडीसी समुदाय अद्भुत है, जहाँ आपको आपके साथी-शिक्षकों और मेंटर का भरपूर समर्थन मिलता है।

एंथोनी जे. डीएंजेलो के विचार से प्रेरित "सीखने का एक शौक विकसित करें, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप कभी भी जीर्ण नहीं होंगे" - मैंने टीडीसी कार्यक्रम को एक दो-तरफा प्रक्रिया के रूप में देखा, जहाँ मैं बच्चों के जीवन को बदलकर एक स्वस्थ समाज की परिकल्पना कर सकती हूँ और बनाने के लिए कई नई तकनीकें साझा करता है। मुझे गर्व है कि मैं इस समुदाय का हिस्सा हूँ जिसने स्टूडेंट्स के समग्र विकास के लिए एक सक्षम शिक्षा का माहौल दिया है।

शिक्षक, कार्यसाथी वातावरण लाने के अलावा, नई विधियों और अभ्यासों का स्वागत करने वाले बन गए हैं, जो शिक्षा को मजेदार बनाता है। टीडीसी कार्यक्रम ने एक ऐसे विद्यालय के दरवाजे खोल दिए हैं, जिनमें खुशनुमा और सार्थक गतिविधियों से भरी कक्षा है, और जहाँ भागीदारी से सीखने का माहौल है।

अब मेरी कक्षा कभी भी एक चुपचाप, शांत कक्षा नहीं बल्कि बच्चों के कौतूहल और चुलबुले सवालों वाली कक्षा है, जिसमें उन्हें अपने विचारों को साझा करने के लिए जगह मिलती है।

यह शिक्षा प्रक्रिया को परिवर्तित करने के लिए एक बड़ा कदम है, जो रविंद्रनाथ टैगोर की कविता के शब्दों को सही साबित करता है - "जहाँ मन भय से विहीन है और सिर ऊँचा है"।

TDC की ज़िम्मेदारियों के कुछ पहलू

आवश्यकता का मूल्यांकन और कार्यक्रम डिज़ाइन:

एक TDC विस्तृत आवश्यकता मूल्यांकन करके शिक्षकों की विशेष चुनौतियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, विशिष्ट क्षेत्रों के लिए समर्पित विकास कार्यक्रम तैयार करता है।

संवाद और कार्यशालाएँ :

एक TDC की मुख्य भूमिका शिक्षकों के लिए कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन करना है। ये शिक्षकों को सीखने, विचार विनिमय करने और प्रभावी शिक्षण तकनीक पर विचार करने का अवसर प्रदान करती हैं। मेंटरशिप और कोचिंग TDC शिक्षकों के लिए कोच की भूमिका निभाता है, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करता है। वे समय समय पर कक्षा का अवलोकन करते हैं, योग्य फीडबैक देते हैं, और व्यक्तिगत सुधार में सहायता करते हैं।

निगरानी और मूल्यांकन:

विकास पहलों के प्रभाव की निगरानी करना महत्वपूर्ण है। एक TDC कार्यक्रमों के प्रभाव को मापने के लिए मूल्यांकन विधियों का प्रयोग करता है, जिससे आवश्यकताओं को संवेदनशीलता से रखने के लिए उचित माहौल हो।

जानकारी और नवाचार:

नवीनतम शैक्षिक चर्चाओं, प्रौद्योगिकियों और शिक्षण रणनीतियों के लिए कार्य करते रहना एक शिक्षक विकास समन्वयक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षण प्रयोगों पर काम करने वाले और धरातल पर उन प्रयोगों को ले जाने वाले शिक्षकों के बीच की वे एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

शिक्षा के इस निरंतर विकास के दृश्य में, एक TDC की भूमिका अनिवार्य है। निर्धारित विकास, मेंटरशिप और संसाधनों के माध्यम से, वे शिक्षकों को उनकी भूमिकाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाते हैं, जिससे छात्रों और विश्वव्यापी शिक्षा समुदाय को लाभ हो। उनका प्रभाव कक्षाओं में प्रतिलक्षित होता है, शिक्षा के भविष्य को आकारित करता है। TDC की महत्वपूर्ण भूमिका को मानते हुए, हम एक और नवाचारी, प्रभावी और छात्र-केंद्रित शिक्षा अनुभव की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

टीडीसी के रोल में मुझमें आए बदलाव :

जब से मैंने टीडीसी की जिम्मेदारियों को सँभाला है, तब से मेरे शिक्षा कर्म में अद्भुत परिवर्तन आया है। मेरे पास अब एक नया दृष्टिकोण है और मैं अब पूरी तरह से समर्थ हूँ।
मैंने प्रशासनिक कार्यवाहियों में सुधार किए हैं, और विद्यार्थियों के शिक्षा स्तर को उच्च किया है। टीडीसी की यह भूमिका मेरे शिक्षा कार्य में नई ऊर्जा और समर्पण का स्रोत बन गई है, और मैं गर्व से कह सकती हूँ कि मेरे शिक्षा समुदाय में हो रहे बदलाव का मुझे हिस्सा बनने पर गर्व है।

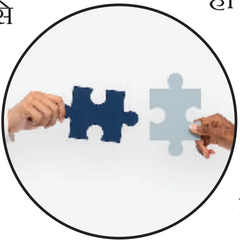

अब बच्चे निकाल रहे हैं अपनी ई-मैगज़ीन

कादंबरी लोहिया
प्रवक्ता अंग्रेज़ी

21 मार्च 2023 का दिन। एक खास दिन। इस दिन दिल्ली के शिक्षा निदेशक आदरणीय हिमांशु गुप्ता के कर-कमलों से 120 ई-पत्रिकाओं का लोकार्पण किया गया। इन पत्रिकाओं के बारे में विशेष बात यह है कि इनकी संकल्पना से लेकर निर्माण तक, प्रत्येक कार्य दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों ने अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में किया। इन ई-पत्रिकाओं की थीम थी 'सतत विकास लक्ष्य 5- लैंगिक समानता'। निदेशक महोदय ने इस कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के साथ बातचीत की। विद्यार्थियों ने अपनी ई-पत्रिका बनाने के अपने अनुभवों और प्रयासों को उत्साहपूर्वक विस्तार से बताया। उनके अनुसार, परियोजना ने उनके मनोबल को बढ़ाने में तो सहायता की है, इससे उनके भाषा और साहित्यिक कौशलों का भी काफी विकास हुआ।

ई-पत्रिकाओं की इस परियोजना की कल्पना विद्यार्थियों को एक मंच प्रदान करने के लिए की गई थी जहाँ वे सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने की दिशा में अपनी विचार-प्रक्रिया को व्यक्त कर सकें।

यह परियोजना चुने गए 120 स्कूलों में लागू की गई थी जहाँ सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों को शामिल करते हुए संपादकीय और सलाहकार बोर्ड बनाए गए थे। उन्होंने पत्रिका के निर्माण में योगदान दिया।

प्रत्येक स्कूल ने अपनी ई-पत्रिका के लिए अनेक अनोखे और अद्वितीय शीर्षक सोचे जैसे - Edu-Candor, Elie-Reve, Nav-Kalol, Edventure आदि।

शिक्षा निदेशालय के सभी 1046 सरकारी स्कूलों में विभिन्न अन्य प्रासंगिक टीमों को लेकर यह परियोजना अगले सत्र 2023-24 में जारी रहेगी। इस संदर्भ में GGSSS सभापुर (ID-1104011) की विद्यालय प्रमुख श्रीमती अनुपमा मल्होत्रा ने बताया, "हमारे स्कूल की ई-पत्रिका "SHequal" का केंद्रीय विषय है लैंगिक समानता। इसके लेख सभी जेंडर्स की बात करते हैं और जेंडर्स समानता की वकालत करते हैं। वे विचारों में उथल-पुथल जगाते हैं और निश्चय ही वे इसके पाठकों के दृष्टिकोण को बदलने जा रहे हैं।
हमारी टीम ने मिशन बुनियाद, ईएमसी, हैप्पीनेस और प्रोजेक्ट वॉइस जैसे विषयों पर लैंगिक समानता आधारित लेखों को शामिल करने का प्रयास किया है।"

हिमांशु गुप्ता की ओर से शिक्षा निदेशालय के लिए
और लक्ष्मी स्टोर, बी-1606, शास्त्री नगर, दिल्ली-52 पर
मुद्रित और शब्दार्थ, सूचना एवं प्रचार निदेशालय
दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली से प्रकाशित
संपादक - डॉ बी. पी. पांडे

RNI Reg No. 23771/71
Magazine Post Registration Number DL(DS)-44/MP/2022-23-24

दिल्ली शिक्षा के पुराने अंक आप नि:शुल्क ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं।
दिल्ली शिक्षा को ऑनलाइन पढ़ने के लिए इस लिंक पर जाएँ
https://fliphtml5-com/-bookcase/jlddc"